मासिक

जय हाटकेश वाणी

jaihaatkeshvani.com

जून-जुलाई 2016 वर्ष : 11 अंक : 02-03

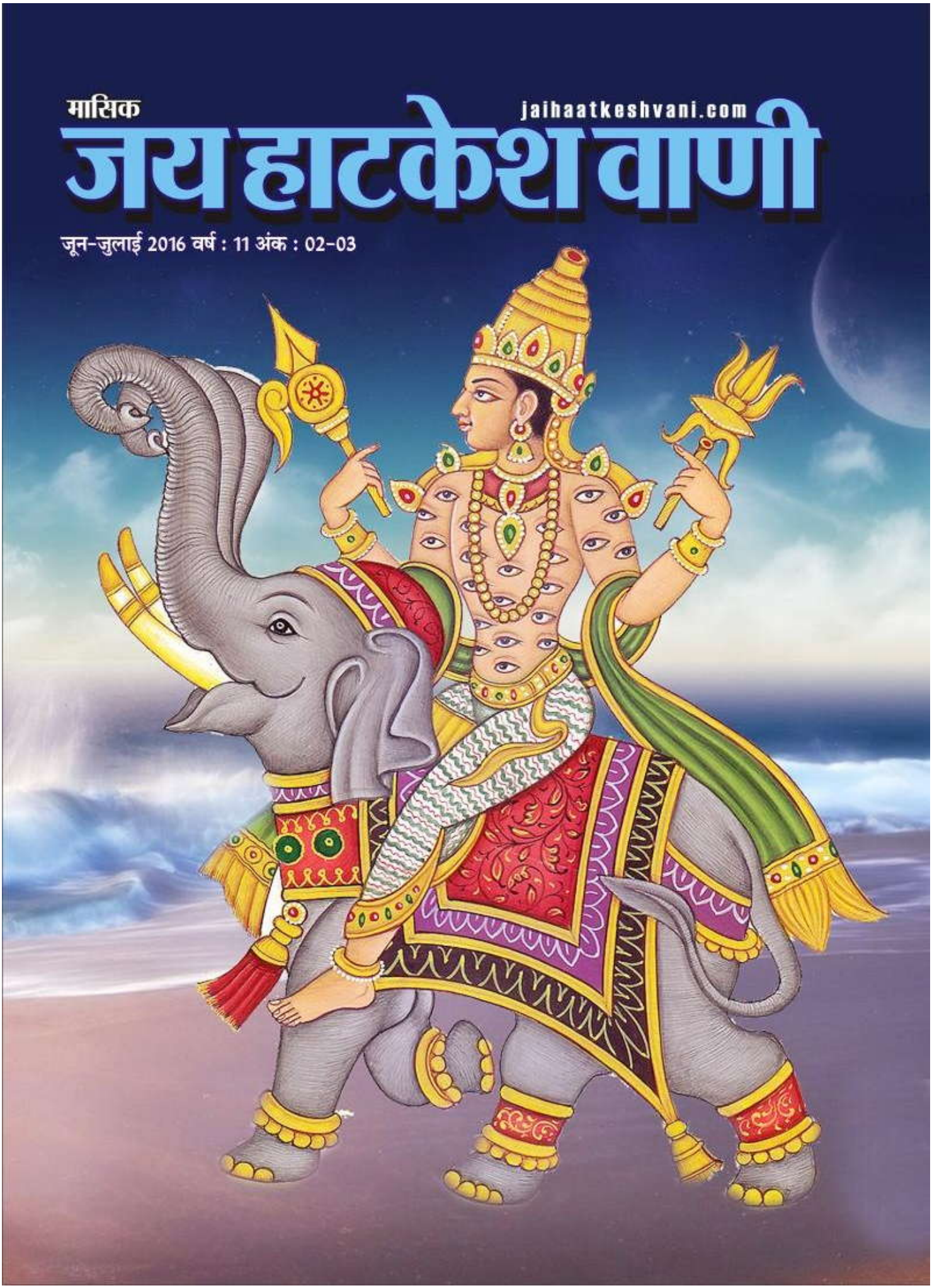

श्री हाटकेश्वर धाम

प्रथम वर्षगाँठ पर स्वागत, वंदन, अभिनंदन

इस शुभ अवसर पर मालवमाटी के परमसंत पूज्य गुरुदेव पं.श्री कमलकिशोरजी नागर महाराज जिन्होंने श्री हाटकेश्वरधाम एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में भव्य निर्माण अपने माता-पिता की स्मृति में कर समाज को समर्पित कर अतुलनीय योगदान प्रदान किया। आपके आशीर्वाद से सिंहस्थ 2016 में श्री हाटकेश्वर धाम समाजजनों के लिये लाभकारी रहा। श्री हाटकेश्वर धाम न्यास मंडल की ओर से आपको एवं आपके परिवार को नमन।

न्यास मंडल, श्री हाटकेश्वर धाम

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा
सौ.आभा विजयशंकर मेहता

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

अनुक्रमणिका

मेलबोर्न में हाटकेश्वर जयंती 08

सिंहस्थ का समापन समारोह 14

राऊ में हाटकेश्वर जयंती 22

वैराग्य की अधिष्ठात्री माँ नर्मदा 27

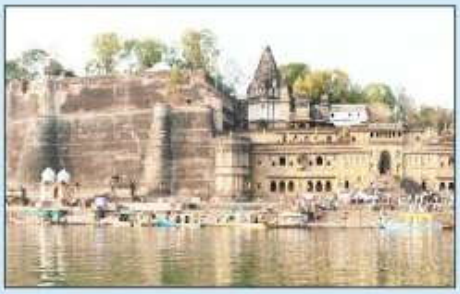

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो. 9826095995, 9926285002

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

मूल्य 10/-रुपये

पहले विचार मंथन जरुरी....

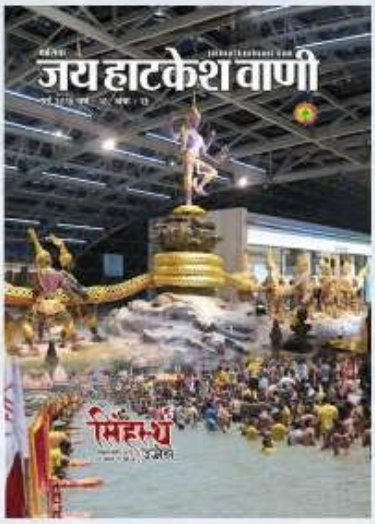

विगत माह अवन्तिका नगरी में भव्य सिंहस्थ महाकुंभ सम्पन्न हुआ, जिसका आधार हजारों वर्ष पूर्व हुआ समुद्र मंथन था जिसका उद्देश्य भगवान इन्द्र को उनका राज्य एवं देवताओं को उनकी शक्ति लौटाने का था। दरअसल समुद्र मंथन हो या विचार मंथन इन दोनों का ही उद्देश्य समाज में या देश में सुशासन की स्थापना एवं समृद्धि की परिकल्पना ही होती है। समुद्र मंथन से जिस प्रकार विष, अमृत एवं अन्य बहुमूल्य वस्तुएं प्राप्त हुई, वैसे ही वैचारिक प्रयत्न से भी अच्छी या बुरी बातें उभरती है। वास्तव में अगर देखा जाए तो राष्ट्र के विकास की बात हो या समाज के, उसमें विलम्ब होने से बहुत सारी खामियां आ जाती है, या अवांछित बातें होने लगती है। अगर उनमें विलम्ब हो गया है तो अब देर नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे समाज के पिछड़ने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। आज हमारे समाज में अनेक कुरीतियां घर कर गई है या कहा जाए कि सुधार की प्रक्रिया धीमी या अवरोध युक्त है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। एक तरफ हम इक्कीसवीं सदी में होने का दावा करते हैं, उत्साहित होते हैं, परन्तु सदियों पुरानी कुरीतियों को छोड़ पाने का हममें साहस नहीं है। अन्य प्रगतिशील समाजों को भी देखकर हम जागरुक नहीं हो पा रहे हैं। आज हमारे समाज को ऐसे विचार मंथन की जरूरत है, जिसमें समाज के हर व्यक्ति को अपनी बात करने का अवसर मिले, सब मुक्त कंठ से अपनी बात रख सकें। हाँ उस मंथन में विष भी हो सकता है तथा अमृत भी। विषग्रहण करने के लिए आज भी हमारे कुलदेवता भगवान हाटकेश्वर उपस्थित है तथा अमृत रुपी विचारों से हम अपने समाज को प्रगतिशील एवं समृद्ध तथा अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण बना सकते हैं। मेरा तो विचार है कि आगे का सफर अब इस विचार मंथन के बाद ही शुरु हो, सबकी सहमति एवं सहयोग का सिलसिला चले।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

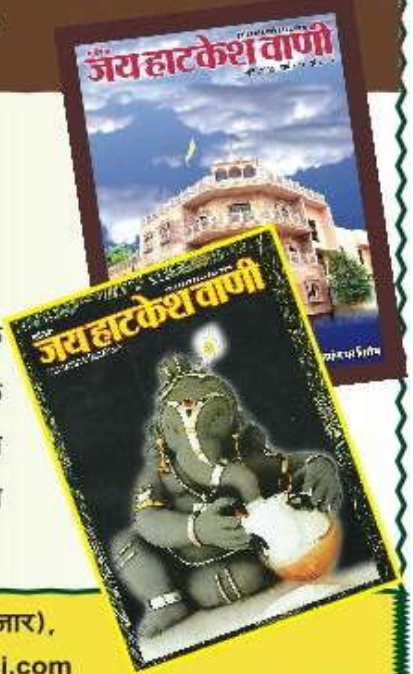

मैं .....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- जय हाटकेश वाणी, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

यह है असली सम्मान...

मासिक जय हाटकेश वाणी के प्रकाशन को प्रारम्भ हुए मई में 10 वर्ष पूर्ण हो गए। वर्तमान दौर में इस तरह की पुस्तकों का प्रकाशन समय, श्रम एवं धन के बड़े व्यय के अलावा इस मायने में भी चुनौतिपूर्ण है कि वर्षों पुरानी जो पढ़ने की परम्परा थी वह आज खत्म हो चुकी है। आज टी.वी., कम्प्यूटर, मोबाईल में मशगुली इतनी अधिक है कि किताब पढ़ने का समय कहां है। आपको याद होगा कि एक समय घरों में समाचार पत्रों के साथ मुखिया, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिनमान, नवनीत आदि साहित्यिक पुस्तकें मंगवाते थे, गृहिणियां, गृहशोभा, सरिता, मुक्ता और बच्चों के लिए लोटपोट, चंपक, मधु मुस्कान, चंदा मामा आदि पुस्तकें मंगवायी और पढ़ी जाती थी। धीरे-धीरे पढ़ने की परम्परा खत्म होती गई और वे प्रकाशन भी शनैःशनै बन्द हो गए। आज के जमाने में भले ही अपने समाज के बहाने ही घर के प्रत्येक सदस्य यदि प्रतिमाह जय हाटकेश वाणी का इंतजार करता है और उसे चाव से पढ़ता है तो पढ़ने की पुरानी परम्परा को पुनर्जीवित करने का श्रेय 'वाणी' को जाता है। जो आज के हायटेक युग का मुकाबला करने का एक सफल प्रयास है, यदि समाज के घरों में किसी पुस्तक का बेसब्री से इंतजार किया जाए तो यह किसका सम्मान है? इंतजार और बेसब्री का आलम तो कुछ अधिक ही है, कईं परिवारों में यदि पुस्तक प्राप्त नहीं होती तो वहाँ से फोन तक आ जाते हैं और पिछले दिनों तो वाट्सएप पर बकायदा एक अभियान चला कि जिसके केन्द्र में केवल 'वाणी' का डाक द्वारा प्राप्त न होने का मुद्दा ही था, कितनी लोकप्रियता... कितनी.... ? वह भी आज के जमाने में जब कि पढ़ने की प्रवृत्ति खत्म हो जाने से बड़े-बड़े प्रकाशको को अपने प्रकाशन मजबूरन बंद करना पड़े। 'जय हाटकेश वाणी' ने पढ़ने और लिखने की परम्परा की पुर्नस्थापना की है, समाज के गणमान्य लेखक एवं लेखिकाएं यहाँ तक कि बच्चे भी अपनी रचनाएं भेज रहे हैं... छप रहे हैं तथा पढ़े जा रहे हैं... यह सुखद संकेत है। यदि पाठकगण वाणी का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं तो यह हमारे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। यदि कुछ पाठकों को डाक में गड़बड़ी के चलते 'वाणी' प्राप्त नहीं होती तो हम उन्हें कोरियर द्वारा पुस्तक उपलब्ध करवाते हैं, क्योंकि आज के जमाने में कौन किसी प्रकाशन की इतनी परवाह करता है आया तो पढ़ लिया, न आया तो नहीं पढ़ा, परन्तु समाजजन यदि इस प्रकाशन की इतनी परवाह करते हैं तो यह हमारे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। समाज में यदि बदलाव लाना है, रुढ़ियों में परिवर्तन करना है, नवसमृद्धि की ओर बढ़ना है तो आखिर क्या साधन है उसके लिए आज का दौर तो इतना व्यस्तता भरा है कि घरों में परिवार के सदस्यों को आपस में चर्चा करने का ही समय नहीं है तो वे आखिर समाज के बारे में चर्चा कब करेंगे और परिवर्तन तो विचार-विमर्श से ही आ सकता है।

यदि अतिव्यस्तता के इस दौर में हम अत्यंत ज्वलंत प्रश्न उठाकर समाजजनों को कुछ सोचने पर मजबूर कर सकें तो यह बहुत बड़ी क्रांति है। 'वाणी' का प्रवाह देशभर के नागरजनों तक हो रहा है, तथा संवादहीनता की स्थिति खत्म हुई है। विचार का नया दौर प्रारंभ हुआ है, और यह 'वाणी' की दस साल की सतत तपस्या है जो विचार क्रांति के रूप में व्याप्त हो गई है। हालांकि अभी बहुत कुछ होना बाकि है, परन्तु कहा जाता है ना कि किसी कार्य की शुभ शुरुआत ही उसका शुभ अंत तय कर देती है। 'वाणी' का प्रवाह गंगा के प्रवाह के अनुरूप पवित्र है, सब लोग यदि अपने-अपने हित अनुसार उसमें स्नान करें अपने हाथ धोए और लाभान्वित हो यही उद्देश्य है और कुछ भी नहीं। जहाँ-जहाँ भी कुछ नया होगा परिवर्तनकारी होगा उसे आलोचना सहनी ही पड़ती है और जो दृढ़संकल्पित होते हैं, वे आलोचनाओं से कभी नहीं घबराते, यह तो आजकल लोकप्रियता का पैमाना है कि जितने अधिक आपके विरोधी होंगे उतनी ही अधिक आपकी प्रसिद्धि है।

जय हाटकेश।

-संगीता दीपक शर्मा

एकजुटता से ही मिलती है सफलता

किसी भी अभियान की सफलता के पीछे जो-जो भी बातें होती है उसमें एक है संगठन शक्ति। इस बार एक माह के सिंहस्थ के मेले में कई अनूठी बातें देखने में आई और उनमें से एक था संगठन का महत्व। मैंने बहुत नजदीक से कुंभ को देखा। चाहे व्यवस्था शासन-प्रशासन की हो, साधु-संतों की हो या श्रद्धालुओं की। जहाँ-जहाँ संगठन शक्ति मजबूत रही वहां-वहां परिणाम सफलता से भरे हुए आए।

लगभग पांच करोड़ लोग उस धरती से निकल जाए जिसकी जनसंख्या मुश्किल से सात लाख हो, तो कुछ व्यवस्थाएं ऐसी जुटाना पड़ती है जो केवल आदेश से या धन से पूरी नहीं होती। एक समूह इकट्ठा होता है व्यक्तियों का और जब वो संगठन शक्ति के भाव से काम करता है तब सफलतापूर्वक आयोजन सम्पन्न होता है।

सिंहस्थ के बारे में मैं बहुत अधिक चर्चा नहीं करुंगी, लेकिन जो शिक्षा मिली वो यह है कि यदि ऐसी ही संगठन शक्ति हमारे समाज में भी आ जाए तो आज हमारा समाज जो नई-नई जिम्मेदारियाँ हाथ में लेना चाहता है वे अवश्य पूरी हों। हमारे समाज के ही अनेक संतों ने सिंहस्थ में कैंप लगाए और सभी लोकप्रिय भी हुए।

हमें संगठन शक्ति मजबूत करने के लिए इन लोगों का भी उपयोग करना चाहिए। इस समय हमारे समाज में तीन वर्ग के लोग हैं- एक, जो वृद्ध हो गए, लेकिन उनके पास अनुभव है। दूसरा वर्ग वह है जिनके पास अभी पद है, अधिकार है, लेकिन प्रौढ़ हो चुके हैं और तीसरा वर्ग युवाओं का है। देखने में यह आता है कि युवा पीढ़ी अपने कॅरियर, महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में इतनी व्यस्त हो गई है कि उनके लिए समाज का कोई महत्व ही नहीं है। वे जाति को प्रधानता नहीं देते, वे अपने काम में और अपने लक्ष्य के प्रति इतने समर्पित हो गए कि उन्हें कौन समझाए कि इन सबके साथ समाज का महत्व समझना चाहिए।

हम नागर ब्राह्मण हैं ये गौरव हमारे भीतर एक ऊर्जा भरेगा और भौतिक जीवन में जो उपलब्धि हम चाहते हैं उसमें मदद करेगा। इसलिए अब जब संगठन की बात की जाए तो नई पीढ़ी को जोड़ने के लिए नए ढंग से काम करना होगा। इस पीढ़ी के पास योग्यता है, ऊर्जा है, लगन है बस थोड़ी सी रूचि जगाना है।

मैंने इस कुंभ में देखा कि एक बड़ी संख्या में नई पीढ़ी भी आई, साधु-संतों से मिली और शिप्रा में स्नान किया। इसका मतलब नई पीढ़ी चाहती है कि भारतीय संस्कृति की परंपराओं से जुड़ें। बस, उनकी इसी चाहत को हमें समाज और सेवा से जोड़ना है। मुझे तो लगता है इस पर सभी लोगों के विचार आमंत्रित किए जाना चाहिए कि किस तरह से इस अभियान को पूरा करें और जैसे ही समाज का यह युवा तबका हमसे जुड़ेगा हमारी संगठन शक्ति मजबूत होगी और नागर ब्राह्मण समाज जो नए-नए अभियान हाथ में लेना चाहता है वो अवश्य पूरे होंगे।

नई पीढ़ी के बच्चे जब समाज से जुड़ेंगे तो इसका एक बड़ा लाभ होगा कि हमारे परिवारों पर उनके इस आचरण का प्रभाव पड़ेगा। समाज से कटने के बाद कहीं न कहीं यह अलगाव की वृत्ति परिवार में उतर जाती है। परिवार में कलह और अशांति का एक कारण यह भी बन जाता है। इसलिए हम प्रयास करें कि घरों में तो हम छोटे बच्चों को अपने नागर समाज, अपनी जाति से परिचय कराएं और जैसे ही ये बच्चे बड़े होकर स्कूल-कॉलेजों में जाने लगे, अपनी नौकरी और व्यवसाय की तलाश में दूर निकल जाएं, लेकिन कहीं न कहीं उनके मन में, उनके हृदय के एक कोने में यह बात बैठना चाहिए कि वे नागर हैं इस पर गर्व करें और जहाँ भी अवसर मिले समाज से जुड़ें और सेवा करें।

-आभा मेहता, उज्जैन

कद्र होती है इंसान की जरूरत पड़ने पर ही... बिन जरूरत तो हीरे भी तिजोरी में रखे रहते हैं ।

अपनों से कभी गुस्से से मत बोलो और अपने कभी गुस्से में बोले तो उसे कभी भी दिल पर मत लो।

कार्यकारिणी बनाने का मकसद?

समाज में विभिन्न स्तरों पर पदाधिकारियों को नियुक्त कर संगठन एवं कार्यकारिणी का गठन किया जाता है। जिसमें संरक्षक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, महासचिव, सांस्कृतिक सचिव, प्रचार सचिव, कोषाध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्य सब मिलाकर 20-25 पदाधिकारियों की कार्यकारिणी बनाई जाती है।

आमतौर से समाजों में 2 से 3 संगठन होते हैं, मुख्य संगठन, महिला विंग एवं युवा संगठन इन सबमें मिलाकर कुल 70 से 75 पदाधिकारी होते हैं, परन्तु आमतौर पर देखा जाता है कि आमंत्रण हो या आयोजन हर जगह अध्यक्ष, सचिव के आगे पूरी कार्यकारिणी गौण नजर आती है। यदि पूरी कार्यकारिणी को महत्व ही नहीं मिलता तो उनके चयन का क्या लाभ? मेरा मानना है कि वर्तमान में सामाजिक कार्यक्रमों की असफलता के पीछे कहीं न कहीं कार्यकारिणी की अनदेखी भी है। साधारणतया बड़े नगरों में समाज के 500 से अधिक घर नहीं होते हैं। यदि कार्यकारिणी में 60 सदस्य हैं तो एक पदाधिकारी के जिम्मे मात्र दस घर आते हैं यदि प्रत्येक पदाधिकारी को समान महत्व मिले तो समाज का कार्य इतना आसान हो जाए कि किसी को परेशान न होना पड़े। प्रत्येक कार्य सुचारु हो जाए। केवल यह ध्यान रखना है कि एक कार्यकाल की कार्यकारिणी में एक बार जिन सदस्यों को लिया जाए, अगली कार्यकारिणी में उसी क्षेत्र के अन्य परिवारों के सदस्य लिए जाएं। हर बार एक जैसे चेहरे देख-देख कर समाजजन बोर हो जाते हैं तथा पदाधिकारियों में भी पर्याप्त उत्साह का अभाव हो जाता है। इन्दौर में पिछले कार्यकाल के दौरान मनोनीत अध्यक्ष को इस आधार पर कार्यकाल पूर्ण होने से पूर्व ही हटा दिया गया कि वह निष्क्रिय है तथा समाज की गतिविधियों को संचालित करने में अक्षम है , पूर्व में समाज के प्रति किए गए उनके योगदान को देखते हुए उन्हें कार्यकाल पूर्ण करने का अवसर देना चाहिए था। क्योंकि कुछेक अध्यक्षों को छोड़कर ज्यादातर पर निष्क्रियता का ठप्पा लगा, परन्तु उन्हें भी तो कार्यकाल पूर्ण करने का अवसर मिला। कोई फर्क नहीं पड़ता है कि हम राष्ट्रीय बैनर या प्रादेशिक बैनर के सरमाए काम करते हैं, स्थानीय स्तर पर हमें संगठन को सर्वमान्य एवं सर्वव्यापी बनाना पड़ेगा। तभी हमारे रुके हुए प्रकल्प धर्मशाला, मंदिर तथा नियमित आयोजन में सबकी सहभागिता हो सकेगी तथा आयोजनों की सफलता का प्रतिशत बढ़ सकेगा। कार्यकारिणी के गठन का उपरोक्त प्रयोग हर छोटे-बड़े नगर में किया जा सकता है।

-एक पाठक

पाठक मंच

जो पेड़ मीठे आम देता है उसे ही सबसे ज्यादा पत्थर खाना पड़ते हैं

अंग्रेजी पत्रिका 'फेमिना' की संपादिका को किसी ने पूछा, कि जब लोग आपकी बुराई (criticise) करते हैं, आपकी पत्रिका में कमियां निकालते हैं तब आपको बुरा नहीं लगता? उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि जिस पेड़ पर फल उगते हैं लोग पत्थर उसी को मारते हैं। मैं पत्रिका के माध्यम से एक अच्छा काम कर रही हूँ तो लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं उस पर मुझे ध्यान नहीं देना है।

जय हाटकेश वाणी के साथ अक्सर ऐसा होता है, कई बार पाठकगण कमियां निकालते हैं पर पूरी टीम अपना कार्य निष्ठा से करती रहती है। हर महीने पत्रिका छपवाकर सभी सदस्यों के यहाँ समय पर पहुँचाना और वह भी इतने कम मूल्य में मुश्किल है। फिर भी ये कार्य 10 वर्षों से नियमित रूप से हो रहा है। **हमें 'जय हाटकेश वाणी'** के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, क्योंकि नागर होने के नाते हमारे लेख छापे जाते हैं, अपनी नागर जाति के लोगों के विचार, समाचार सब कुछ इस पत्रिका द्वारा प्राप्त होते हैं। आइए, हम सब मिलकर सोचें कि इस पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए और उसके प्रचार और प्रसार के लिए हम अपना योगदान किस प्रकार से दे सकते हैं? जय हाटकेश।

-उषा ठाकोर

कविता का छपना, सुखद अनुभव

मेरी कविता 'प्यारी बा' को जय हाटकेश वाणी में छापने के लिए धन्यवाद। मेरी काकीजी ने मेरी ओर से यह कविता आपको प्रकाशित करवाने के लिए दी थी तथा बताया था कि कविता 'प्यारी बा' दादी के लिए पोते-पोतियों के मन में उमड़ते प्यार का प्रतिरूप है। मैं आपकी शुक्रगुजार हूँ कि आपने मेरी कविता को पसंद किया तथा उसे अप्रैल अंक में प्रकाशित किया। अचानक आए काल्स एवं वाट्सअप मैसेजेस ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया, मेरी कविता छपी यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई, मानो दुनिया की सबसे बड़ी दौलत मैंने हासिल कर ली हो। कवियत्री बनने के एहसास ने सातवें आसमान पर ही पहुँचा दिया। इस खुशनुमा प्रोत्साहन के लिए एक बार फिर से धन्यवाद। मैं विश्वास करती हूँ कि भविष्य में भी आप मेरे द्वारा लिखे लेख एवं कविताएं सराहेंगे एवं छापेंगे।

-नीरा नागर, मीरा रोड़ थाणे (महा.) मो. 09987768293

मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) के ऑस्बर्टन हॉल में भगवान हाटकेश्वर का पाटोत्सव आयोजित किया गया। चित्र उसी अवसर का।

महिला मंडल की किटी में स्वास्थ्य सम्बंधि चर्चा

आगरा में 8 मई 2016 को गुजराती महिला मंडल की मासिक किटी का आयोजन सम्पन्न हुआ। किटी में 'सेहत' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें डाईटीशियन श्री संजय किरण ठाकुर विशेष तौर पर आमंत्रित किए गए। उन्होंने सभी महिलाओं को डिवाईन नोनी नामक सिरप की विशेषता बताते हुए सभी को इसके नियमित सेवन की सलाह दी। उपस्थित महिला सदस्यों की स्वास्थ्य संबंधि का भी उन्होंने समाधान किया। डॉ.कमलेश नागर ने सभी महिला सदस्यों की ओर से उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए धन्यवाद दिया।

-विनोद शर्मा, आगरा

नई दिल्ली में भारतीय विद्या भवन के संस्कृत प्राचार्य डॉ.रवीन्द्र भाई नागर को विगत दिनों राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में साहित्य एवं शिक्षा में योगदान हेतु पद्मश्री सम्मान भेंट किया। चित्र उसी अवसर का।

नागर मंडल संस्थान उदयपुर के अध्यक्ष डॉ.एस.बी. नागर ने बताया कि सर्वब्राह्मण समाज एवं विप्र फाउंडेशन उदयपुर के तत्वावधान में परशुराम जयंती धूमधाम से मनाई गई। इसमें नागर मंडल संस्थान के सभी सदस्यों ने उत्साह से हिस्सा लिया, समारोह में अध्यक्ष डॉ.एस.बी. नागर को सम्मानित किया गया तथा संध्या समारोह में राजस्थान सरकार के मंत्री श्री राजकुमार रिणवा का अभिनंदन श्री नागर ने किया।

मुम्बई में पाटोत्सव कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

नागर सांस्कृतिक संस्था मुम्बई ने हाटकेश्वर जयंती 24 अप्रैल रविवार को मनाई। महानगर में दूरियों के मद्देनजर यह कार्यक्रम 20 के बजाय 24 अप्रैल को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन कांदिवली पूर्व स्थित एवरशाईन क्लब में किया गया। प्रातः 9 बजे से समाजजनों का आगमन शुरु हो गया। तत्पश्चात लघुरुद्री पाठ का आयोजन किया गया। सभी उपस्थित नागर जोड़ों ने अभिषेक किए। लघुरुद्री पाठ का आयोजन श्री शैलेष भाई याज्ञनिक की ओर से किया गया। जिसका सभी सदस्यों ने लाभ लिया।

श्रीमती मंजुला जोशी, लता झा, उषा ठाकोर, मधुप मेहता, विमलेन्दु ठाकोर ने रुद्राभिषेक एवं हाटकेश्वर बाबा की आरती का सस्वर पाठ किया, अन्त में आरती कर प्रसाद वितरण किया गया। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नए सदस्यों से परिचय का आदान प्रदान हुआ

तथा संस्था ने सभी का तहेदिल से स्वागत किया। संस्था का उद्देश्य है कि समाजजन आपस में सम्पर्क में रहे तथा उनके बीच सौहार्द बना रहे। कार्यक्रम का समापन स्वादिष्ट भोजन के साथ हुआ।

-प्रेषक- रश्मिकांत त्रिवेदी एवं पल्लवी मेहता

हाटकेश्वर परिषद द्वारा हाटकेश्वर भगवान का पूजन

कोलकाता में रिसड़ा में भगवान श्री हाटकेश्वर के पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, प्रातः सुंदरकांड का पाठ हुआ तथा शाम को भगवान हाटकेश्वर का पूजन किया गया, इस कार्यक्रम में परिषद के सभी सक्रिय सदस्यों ने हिस्सा लिया। यह जानकारी श्रीमती रेखा अमर याज्ञिक ने दी है।

वाराणसी में परम्परागत तरीके से मनाया बाबा हाटकेश्वर उत्सव

वाराणसी नागर सेवा समिति काशी द्वारा बाबा हाटकेश्वरजी उत्सव 20 अप्रैल 2016 को गणेश महल अतिथि भवन सिंधिया घाट पर पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। प्रातःकाल बाबा का वैदिक रीति से पूजन पश्चात् ब्राह्मणों द्वारा रुद्राभिषेक तत्पश्चात सायंकाल भव्य श्रृंगार महाआरती हुई। रात्रि में नागर परम्परा अनुसार सामूहिक भोजन प्रसाद ग्रहण किया गया। पूरे कार्यक्रम में सेवा समिति के पदाधिकारियों के निर्देशन में समाज के सभी लोगों ने बड़े उत्साह के साथ कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

-प्रेषक- वरुणजी वामनजी दीक्षित
वाराणसी

बांसवाड़ा में शंकराचार्य जयंती मनाई

बांसवाड़ा में शंकराचार्य मंदिर से सवारी प्रातः 8.30 बजे निकली। 10.30 बजे नगर भ्रमण के पश्चात वापसी पर आरती का आयोजन हुआ। उनके जीवन चरित पर आधारित गोष्ठी के बाद प्रसाद वितरण के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

बैंगलोर में हाटकेश्वर जयंती की धूम–धाम

23 अप्रैल को श्री कन्टेश्वेरा मंदिर बैंगलोर मे हाटकेश जयंती धूम धाम से मनाई गयी । बैंगलोर के वरिष्ठ – श्री अजितजी दवे , श्री संजयजी दवे जो कि विगत 50 वर्षो से इस शहर में है उनके सानिध्य में श्री विकास जी नागर, श्रीमती स्वाति विकास नागर, श्री अनुभव झा, आशुतोष जी मेहता , श्रीमती शिखा आशुतोष मेहता ,विपिनजी, श्री समीर याग्निक , श्री हर्षित शर्मा (उज्जैन), श्री अर्पित शर्मा राऊ (इंदौर), श्री उदय नागर (अंडमान), श्रीमती बबीता उदय नागर, श्री निमेश झा, श्रीमती निधि निमेश झा, श्री अर्चित , श्री कनुजी, श्री उत्कर्ष देसाई, श्री प्रणय मेहता सपत्निक अभिषेक में हिस्सा लिया।

मालसर तीर्थ (गुजरात) में नर्मदा तट पर ज्ञान गंगा प्रवाहित

नर्मदा तट मालसर तीर्थ गुजरात में श्री गीता ज्ञान यज्ञ शिविर में श्री निर्मल त्रिवेदी गीता साधक एवं मर्मज्ञ द्वारा ज्ञान गंगा प्रवाहित की गई। इस अध्यात्म शिविर एवं ज्ञानगंगा यज्ञ का आयोजन स्थानीय श्री सत्यनारायण मंदिर मालसर (जिला बड़ौदा) के परिसर में हुआ। जहाँ शिविर में भाग लेने हेतु सभी सुविधाएँ सदैव उपलब्ध है। ज्ञातव्य है कि यह मंदिर लोकप्रिय एवं प्रातः स्मरणीय परम भक्त भागवत कथाकार स्व.श्री डोंगरेजी महाराज की तपस्थली है, यहीं पर उन्होंने साधना की तथा भागवत कथा प्रवाहित करना आरम्भ किया था। शिविर का शुभारंभ 23-4-16 को हुआ तथा 28-4-16 को समापन हुआ। इसमें अहमदाबाद एवं बांसवाड़ा के 36 भक्तजनों ने हिस्सा लिया। शिविर का प्रारंभ प्रातः 6 बजे हो जाता था, जिसमें प्रथम सत्र में योग, प्राणायाम एवं ध्यान, पश्चात् गीता ज्ञान, जिसमें गीता अध्याय 12 को केन्द्र में रखकर भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, ईश्वर की शरणागति पर श्री निर्मलजी सत्संग करते थे। दूसरे सत्र में श्री दिनेश जानी दिनचर्या के बारे में विभिन्न शास्त्रों के प्रसंगों द्वारा समझाते। दोपहर भोजन एवं विश्राम के पश्चात् अंतिम सत्र में भजन, कीर्तन, सुंदरकांड शिव महिम्न स्त्रोत आदि। सभी सत्र में आनन्द उत्साह, भक्ति, श्रद्धा एवं अपनत्व का माहौल रहा। सभी शिविरार्थी धार्मिक सत्रों के दौरान टी.वी. एवं समाचार पत्रों से पूर्णतः दूर रहे।

-प्रेषक नटवरलाल झा
मो. 09460410399

लखनऊ में हाटकेश्वर जयंती मनाई गई

लखनऊ में श्री हाटकेश्वर नाथ मंदिर में भगवान हाटकेश्वरनाथ की जयंती मनाई गई। जयंती आयोजन के पश्चात् सामूहिक भोज का कार्यक्रम हुआ। जिसमें लखनऊ के सभी नागरजनों ने सपरिवार हिस्सा लिया।

शोभना देसाई तथा राजेश्वरी वछराजानी को नागर गौरव सम्मान

रात्रि पूजा की केन्द्रीय संस्था श्री अमदावादी साथ समस्त विशनगरा म्हाढ़ ट्रस्ट, अंबाजी के आधुनिकीकरण में योगदान अर्पण करने वालों का 'नागर गौरव' में सम्मान करने की प्रणालिका अनुसार, म्हाढ़ में स्वर्गीय हंसाबेन विनायकराय वछराजानी की पावन स्मृति में 100 लीटर वाटर कूलर फिल्टर प्लान्ट के साथ अर्पण करने वाले धन्यभागी श्रीमती राजेश्वरी राजीव वछराजानी राजकोट का संस्था के चेयरमैन श्री अरुणभाई बुच के वरदहस्तों से मेमेन्टो देकर सम्मान किया गया।

रात्रि पूजा का सर्वप्रथम लाभ उठाने अमेरिका विशेष रूप से संक्षिप्त मुलाकात के लिए पधारे न्यूजर्सी स्टेट के करेक्शन अफसर लायन्स क्लब के प्रमुख NONA-Nagars of North America के मुख्य संवर्धक श्री हिमांशु कविवरराय देसाई द्वारा म्हाढ़ के आधुनिकीकरण हेतु अनुदान राशि अर्पण करने के लिए संस्था के प्रमुख श्री नरेशभाई राजा के वरद हस्तो से श्रीमती शोभना हिमांशु देसाई का मेमेन्टो देकर सम्मान किया गया।

म्हाढ़ में वातानुकूलित रुम, अटेज्ड बाथ, आधुनिक किचन, वाईफाई, वाटर कूलर की सुविधाएं उपलब्ध है, लाभ अवश्य लें। सबको विदित करें।

माँ अंबामाता मंदिर में रात्रिपूजा का भव्य आयोजन

आबू रोड़ राजस्थान में स्थित माँ अंबाजी मंदिर में रात्रिपूजा का भव्य आयोजन 25 अप्रैल से 30 अप्रैल तक छः दिवसीय पूर्ण श्रद्धा से धार्मिक वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस पवित्र आयोजन में प्रतिवर्ष अधिकाधिक श्रद्धालु सम्मिलित हो रहे हैं तथा गुजरात के अलावा अन्य राज्यों से भी जातिबंधु इस आयोजन में लाभान्वित होते हैं। इस वर्ष आयोजन में प्रतिदिन औसतन 250 से 300 व्यक्तियों ने हिस्सा लिया। दिन में केवल दूध और रात्रि को माँ अंबा को 9 बजे भोग लगाकर रात्रि 9 से 12 गरबा भजन आदि के पश्चात् 12 बजे सभी प्रसाद ग्रहण करते हैं।

वर्तमान में मंदिर का प्रशासन सरकार के पास है, किन्तु नागरों के विशिष्ट अधिकार के रूप में केवल नागर जातिजनों का थाल (सम्पूर्ण भोजन) ही माताजी को अर्पण होता है। निज मंदिर में माताजी के चरण स्पर्श (पावड़ी पूजा) भी केवल नागर ही कर सकते हैं। इस अत्यंत भावनात्मक आयोजन का आकर्षण बढ़ता जा रहा है, इसकी वृहद और भव्य आयोजन की व्यवस्था का संचालन श्रीमान नरेशभाई राजा, अध्यक्ष समग्र गुजरात नागर परिषद (महामंडल) अहमदाबाद के नेतृत्व में उनके समस्त परिवार सदस्यों तथा सहयोगी कार्यकर्ताओं द्वारा सम्पन्न हुआ। जातिबंधु आगामी कार्यक्रमों का अवश्य लाभ लें, यह अनुरोध है।

प्रेषक- रश्मि पी. पाठक
राष्ट्रीय जनसम्पर्क अधिकारी तथा राष्ट्रीय मंत्री

गुजरात में शोक पत्र का चलन नहीं

अहमदाबाद से पीनाकिन रावल ने बताया कि उनकी पुत्रवधू उज्जैन से है तथा उज्जैन नागर समाज से जुड़े रहने के लिए वे जय हाटकेश वाणी के आजीवन सदस्य बने हैं। उन्होंने पिछले अंक में शोक पत्र से सम्बंधित लेख के सम्बन्ध में बताया कि अहमदाबाद सहित सम्पूर्ण गुजरात में शोक संदेश का प्रचलन नहीं है।

सज रहे भोले बाबा निराले चोले में

10 अप्रैल से ही हाटकेश्वर पाटोत्सव के रात्रिकालीन कार्यक्रमों का भी शुभारंभ रात्रि 8 बजे महाआरती के साथ हुआ। दुल्हन की तरह सजे हाटकेश्वर मंदिर परिसर में विराजमान भोले बाबा का भव्य श्रंगार किया गया था। सैकड़ों समाजजनों ने उत्साह से महाआरती का लाभ लिया। तत्पश्चात् श्री माधव जोशी ने पधारकर संक्षिप्त उद्बोधन देकर उपस्थित जन समूह को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक किया। फिर प्रारम्भ हुआ रास गरबों का कार्यक्रम जिसका महिलाओं बच्चों ने जमकर लुत्फ उठाया। द्वादशी 18 अप्रैल को सांयकालीन आरती के पश्चात् 75 बसंत पूर्ण कर चुके महानुभावों के सम्मानार्थ अमृत महोत्सव प्रारम्भ हुआ। जिन्हें शाल ओढ़ा श्रीफल भेंटकर, स्वस्थ्य जीवन की शुभकामनाएं दी गई। महानुभावों द्वारा अपने जीवन के अनुभवों को साझा किया। तत्पश्चात् बालक-बालिकाओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम में गीता, नृत्य, भजन, नाटक आदि को प्रस्तुतियाँ देकर उपस्थित जनसमूह का भरपूर मनोरंजन किया। समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को इस अवसर पर पुरस्कार वितरित किये गये। देर रात तक जनसमुदाय ने अल्पाहार के साथ उक्त कार्यक्रम का आनंद लिया। प्रदोष 19 अप्रैल को सायं 5 बजे से रुद्राभिषेक प्रारम्भ हुआ। बड़ी संख्या में समाजजनों ने रुद्रीपाठ किया तत्पश्चात् आरती हुई एवं भजन संध्या का आयोजन हुआ। भोले बाबा के भजनों में दर्शक झुमने को मजबूर हो गए। आज ही पाक कला में अपनी श्रेष्ठता दिखाने की होड़ का मनोरंजक कार्यक्रम फन फेयर भी आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न महिला मंडलियों, मित्र मंडलों द्वारा लजीज व्यंजन पावभाजी, छोलेटिकिया, साबुदाना, खिचड़ी, पोहे, आईसक्रीम, लस्सी, कोल्डड्रींक्स, पान वगैरह की दर्जनों स्टॉल लगाकर मेलार्थियों को लुभाया। लोगों ने चटखारे लेकर फनफेयर का आनंद उठाया। हाटकेश्वर जयंती 20 अप्रैल प्रातः 4 बजे से ही भोले बाबा के दर्शनार्थ मंदिर खोल दिया गया था। 5 बजे से जन समुदाय प्रभात फेरी के लिये जुटना प्रारंभ हो गए थे। घरों के बाहर दीपक रंगोली, तोरणद्वार सजे थे। प्रभात फेरी में सैकड़ों, महिलाओं, बुर्जुगों, युवा-युवतियों ने भाग लिया। नागरवाड़ा मोहल्ले की विभिन्न गलियों मार्गों से गुजरने ॐ नमः शिवाय, हर हर महादेव... शंभो, नाचे भोला नाथ... तेरी जटा में सोहें... भजनों से झुमते गाते प्रभात फेली हाटकेश्वर मंदिर परिसर आकर सम्पन्न हुई। प्रातः कालीन आरती में भोले बाबा का भव्य श्रृंगार किया गया था। समाज जन 'जय हाटकेश्वर' उद्बोधन से एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे। भक्तिपूर्ण वातावरण में 'जय गंगाधर' हर जय गिरीजा धिश... आरती समवेत स्वरों में की गई तत्पश्चात् स्वयंभू नीलकंठ महादेव मंदिर में भी आरती हुई। 11 बजे से भोजन निमंत्रण के लिए नौतरा देने के लिए युवा बच्चे युवतियों, समाज के आचार्य अध्यक्ष के साथ नागरवाड़ा की गलियों में ढोल के साथ निकले। दोपहर में आचार्यों द्वारा षडोपचार पूजन करवाया गया। साथ ही सायंकालीन श्रृंगार भी प्रारम्भ हुआ। वरघोड़े की तैयारियाँ की जा रही थी। नौजवान केसरिया दुपट्टे, ओढ़े कार्यक्रम शोभा बढ़ा रहे थे। सायं 6 बजे भारी संख्या में समाजजनों के साथ बाबा भोलेनाथ की सवारी नागर भ्रमण हेतु रवाना हुई, नाचते गाते युवक-युवतियाँ, ढोलक मंजीरे की थाप पर गरबा नृत्य करते, जिधर से सवारी निकली रास्ता जाम रहा। 2 घंटे नगर भ्रमण के पश्चात् वरघोड़ां पुनः हाटकेश्वर मंदिर पहुँचा। जहाँ एक बार पुनः आरती उतारी गई। आरती के पश्चात् महाप्रसादी का कार्यक्रम रखा गया था, जिसमें युवकों, बच्चों ने पिताम्बर पहनकर युवतियों महिलाओं ने लाल साड़ियाँ पहनकर उत्साहपूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। इस तरह 10 दिवसीय जयंती कार्यक्रमों का समापन हुआ।

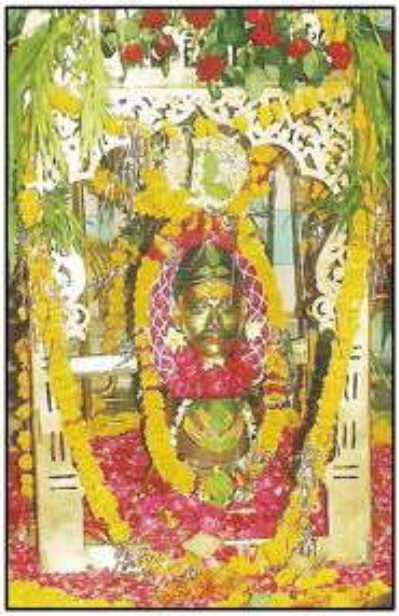

मन एवं तन का स्वास्थ्य रहा पाटोत्सव के केन्द्र में

बांसवाड़ा वडनगरा नागर समाज द्वारा हाटकेश्वर पाटोत्सव हर वर्ष निराले ढंग से मनाया जाता रहा है। इस वर्ष स्वस्थ जीवन शैली को केन्द्र बिन्दु रखकर कार्यक्रम तय किये गये।

द्वारा- चेतन राय नागर
कुबरिया चौक, नागरवाड़ा, बांसवाड़ा मो. 9950646609

वडनगरा नागर समाज, बांसवाड़ा

नई टीम घोषित

हाटकेश्वर जयंती के पश्चात तीन वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर 22 मई 2016 रविवार को चुनाव सम्पन्न हुए। वर्तमान अध्यक्ष श्री दिलीप दवे सुपुत्र श्री चंपालाल दवे ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी केवल त्रिवेदी और उपाध्यक्ष पद पर श्री सतीश नागर सुपुत्र श्री दुर्लभराम त्रिवेदी ने सुरेश पंडया से विजय हासिल की। पश्चात् विजय जुलूस निकालकर नवनिर्वाचित अध्यक्ष और उपाध्यक्ष को समाजजनों ने बधाई दी। चुनाव में उत्साह था, परन्तु वातावरण सोम्य और सहयोगी रहा। चुनाव प्रभारी श्री कोमल पंड्या ने परिणामों की घोषणा की। कार्यकारिणी का चयन कर शपथ विधि बाद में सम्पन्न की जावेगी।

-डॉ.आशीष दवे प्रवक्ता
नागर समाज, बांसवाड़ा

यथा नाम तथा गुण

भास्कर त्रिवेदी की राजकीय सेवा से समाजसेवा में पदोन्नति

भास्कर का शाब्दिक अर्थ है 'सूरज' जो निःस्वार्थ नियमित, अनवरत, निर्बाध रूप से अपना कर्त्तव्य निभाता है चाहे इस सेवा भावना को कोई देखे या न देखे। पूरी दुनिया जब नींद में अल्साई होती है सूरज नित्य अपना काम कर चुका होता है। बांसवाड़ा के वडनगरा नागर 'भास्कर त्रिवेदी' भी अपने नाम के अनुरूप समाज के कार्यों में अपना योगदान देते रहे हैं। वे जय हाटकेश वाणी के नियमित पाठक एवं सदस्य तो है ही साथ ही ज्यादा से ज्यादा समाजजनों को इससे जोड़ने की तमन्ना रखते हैं। नागरवाड़ा में जब किसी को पत्रिका नहीं मिल पाती थी तो वह प्रबंधन से नाराजी रहते हुए भी व्यक्त नहीं करता था, मगर भास्करजी ने स्वयं आगे आकर वितरण की जिम्मेदारी अपने हाथों में लेकर घर-घर जाकर वितरण करने का अनूठा ध्येय बना लिया। जिससे किसी को नाराजी न रहे। समाज की सभी गतिविधियों में अपने अप्रतिम योगदान एवं स्पष्ट और निर्भिक व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते हैं। समाज के किसी विषय पर अपनी स्पष्ट राय और समालोचना करने में उनका कोई सानी नहीं है। विगत 30 अप्रैल को माही परियोजना से लिपीक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, परन्तु यह उनकी राजकीय सेवा से समाज सेवा में पदोन्नति ही कही जाएगी। भास्कर त्रिवेदी के अनवरत सेवा कार्य, निःस्वार्थ भावना एवं कुछ कर गुजरने के जज्बे को सलाम भास्कर।

-डॉ.आशीष दवे (उपाध्यक्ष) वडनगरा नागर मंडल, बांसवाड़ा

नौसेना के बाद समाजसेवा में श्री चन्द्रमोहन व्यास

राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान के संस्थापक तथा लगभग 15 वर्षों से प्रतिष्ठान के प्रमुख भारतीय नौ सेना में लगभग 30 वर्षों तक सेवा रत रहे श्री चन्द्रमोहनजी व्यास नौसेनिक युद्ध पोत आई.एन.एस. 'अंबा' के सर्वोच्च कमांडर भी रहे।

इलाहाबाद के मूल निवासी श्री व्यासजी अपनी प्रतिभा के बल पर नौसेना में कड़ी प्रतियोगिता के बाद प्रवेश पा सके। उन्हें 1971 के बंगलादेश युद्ध में कुशल नेतृत्व एवं अनुकरणीय वीरता के लिये पुरस्कृत किया गया था। वे अपने नौसैनिक युद्धपोत 'अंबा' के साथ विभिन्न देशों में भी गये। उनकी रुस देश की यात्रा के फोटो में जो इसके साथ छपा है, वे मध्य में खड़े हैं। श्री व्यासजी सेवा काल में केन्या, मारिशस आदि देशों में भी गये तथा वहाँ के राष्ट्राध्यक्ष जनरल मोबुतु एवं सरराम गुलाब उनसे बड़े प्रभावित हुए।

सेवानिवृत्त के पश्चात् श्री व्यासजी सामाजिक मूल्यों व संस्कारों के पुनःस्थापन के लिये कार्यरत संस्थाओं से सक्रीय रूप से जुड़े हैं।

वे ज्ञाति में प्रतिस्थापित मूल्यों और संस्कारों को बचाये रखने के लिये सतत् प्रयत्नशील है। श्री व्यासजी मध्यप्रदेश की ज्ञाति संस्थाओं द्वारा इस संबंध में किये जा रहे प्रयत्नों कार्यक्रमों की भूरी-भूरी प्रशंसा करते रहते हैं एवं मध्यप्रदेश के संगठनों के कई महानुभाव प्रतिष्ठान में महत्वपूर्ण पदों पर है। मुख्य रूप से युवापीढ़ी की जानकारी में लाना है कि सेना की सेवा के साथ सामाजिक दायित्व भी निभाना संभव है।

प्रेषक- रश्मि पी. पाठक
राष्ट्रीय जनसम्पर्क अधिकारी
एवं राष्ट्रीय मंत्री
भावनगर (गुजरात)

श्री हाटकेश्वर धाम में सिंहस्थ 2016 का आनंद के साथ समापन समारोह

विश्वप्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग, भूतभावन बाबा महाकालेश्वर मंदिर के समीप, हरसिद्धिपाल एवं मोक्ष दायिनी माँ क्षिप्रा के तट के किनारे स्थित हमारा श्री हाटकेश्वर धाम जिसे हमारे समाज के गौरव मालव माटी के परमसंत पूज्य गुरुदेव पं.श्री कमलकिशोरजी नागर महाराज ने अपने माता-पिताश्री की स्मृति में एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में नवनिर्माण कर समाज को समर्पित कर दिया। न्यास मंडल विगत 3 वर्षों से सिंहस्थ 2016 में समाजजनों को इसका लाभ प्राप्त हो। इसी प्रयत्न में था, जिसे पूज्य गुरुदेव ने 1 वर्ष की अल्प अवधि में भागीरथी प्रयासों से खुबसूरत राजस्थानी कारीगरी एवं सौन्दर्यता के साथ नवनिर्माण करवा दिया, न्यास इस अवसर पर श्री पूज्य गुरुदेव श्रद्धेय श्री प्रभूजी महाराज एवं इनके परिवार का कृतज्ञ रहेगा।

श्री हाटकेश्वर धाम ऐसा केन्द्र बिन्दू था जो रामघाट के समीप था, श्री महाकालेश्वर मंदिर, श्री हरसिद्धि माता मंदिर, चार धाम, रुद्रसागर तथा सभी पेशवाई भी यहीं से होकर निकली। इसी कारण यह समाजजनों के आकर्षण का केन्द्र रहा। न्यास मंडल ने बैठक में निर्णय लिया था कि सिंहस्थ के दौरान सर्वप्रथम प्राथमिकता समाजजनों को दी जाएगी। इसके लिये 2-3 माह पूर्व जय हाटकेश वाणी के माध्यम से अपील की गई थी, साथ ही यह निवेदन किया था कि समाज सेवा हेतु सिंहस्थ अवधि में पधारे, लेकिन हमें इसका कोई अधिक प्रतिसाद नहीं मिला, न्यास ने दानदाताओं से जो राशि मिली थी, उसे श्री हाटकेश्वर धाम में मूलभूत सुविधाएँ जुटाने में लगा दिया। इसलिये सिंहस्थ अवधि में श्री हाटकेश्वरधाम में व्यवस्था एवं मेन्टेनेंस खर्च निकालने के लिये कमरों का किराया 750/- रुपये रखा गया था। इसमें भी एक कमरे में 7-8 लोग रहे हैं।

साथ ही मांगलिक हाल एवं तल मंजिल हाल निःशुल्क 3 दिन ठहरने के लिये प्रदान किया गया। इसमें भी समाजजन अपने साथ अन्य लोगों का ठहरा गये। भगवान श्री हाटकेश की कृपा से सिंहस्थ सानंद निपट गया। श्री हाटकेश्वर धाम में जो भी आया उसकी स्मृति पटल पर छाया रहेगा। श्री हाटकेश्वर धाम में अनुपम दिव्य मंदिर, जिसमें श्री राधाकृष्ण की मनुहारी मूर्ति, हमारे इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर का परिवार सहित प्रबल-प्रताप, हमारे पूज्य संत नरसिंह मेहताजी की भक्तिमय मुद्रा सुबह-शाम मन को आनंदित करते सुमधुर भजन, आसपास का धार्मिक आनंदमय वातावरण श्री हाटकेश्वर धाम में लिखे गये पूज्य गुरुदेव के सुविचार मानो एक पंक्ति एक लाख की हो। श्री हाटकेश्वर धाम में क्या नहीं था, साथ ही पर्व स्नान एवं शाही स्नानों पर सुबह-शाम नाश्ता ..... भोजन ....प्रसादी।

देशभर के दूरस्थ क्षेत्रों में बसे नागर गुजरात, राजस्थान, बिहार, उत्तरप्रदेश, मुम्बई, देहली, कलकत्ता, आन्ध्रप्रदेश के साथ मालवांचल के ग्रामीण क्षेत्र से पधारे और श्री हाटकेश्वर धाम में आनंद प्राप्त किया। न्यास मंडल के तीनों पदाधिकारी सुरेन्द्र मेहता, सुमन (अध्यक्ष), रामचन्द्र नागर (कोषाध्यक्ष), संतोष जोशी (सचिव) एवं श्री विजयप्रकाशजी मेहता वरिष्ठ न्यासी सदस्य नागदा, श्री वासुदेवजी त्रिवेदी (वरिष्ठ न्यासी सदस्य) खजराना ने 1 माह की सिंहस्थ अवधि में पूरा समय दान कर समाजजनों की उचित व्यवस्था एवं सेवा प्रदान की। हम जानते हैं कि हम समाजजनों को संतुष्ट नहीं कर पाये होंगे। उसके भी कई कारण रहे। हम हृदय से क्षमाप्रार्थी है। श्री हाटकेश्वर धाम में समुचित व्यवस्था मेन्टेनेंस साफ-सफाई हेतु 10.12 लोगों का स्टाफ रखा गया था। स्टाफ साफ-सफाई, बिजली पानी आदि पर ही लगभग 1 लाख रुपये का खर्च हुआ है।

-न्यास मंडल श्री हाटकेश्वर धाम

सिंहस्थ 2016 समापन समारोह

श्री हाटकेश्वर धाम में प्रातः भगवान श्री हाटकेश का अभिषेक पूजन आरती प्रसादी वितरण श्री मोहनजी शर्मा (युवा सामाजिक सक्रिय कार्यकर्ता) देवास ने सपत्निक अपनी विवाह की 25वीं वर्षगांठ पर किया। अभिषेक पूजन पं. श्री गोविन्दवल्लभ त्रिवेदी के द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री गणेश वंदना श्री हिमांशु पौराणिक इन्दौर द्वारा प्रस्तुत की गई। न्यास मंडल कार्यक्रम में सन्तों का सम्मान कर गौरवान्वित हुआ। सर्वप्रथम पूज्य महामंडलेश्वर श्री विद्याधरदासजी महात्यागी तपोवन ब्रह्मऋषि महात्यागी आश्रम इलाहाबाद, ज्योतिषाचार्य पं.श्री कैलाशगुरुजी (इन्दौर), भगवताचार्य पं.श्री सुधांशु जी महाराज (खजराना) का शाल श्रीफल भेंटकर सम्मान किया। सभी सन्तों ने आशीर्वचन दिये। न्यास ने अन्नक्षेत्र का सफल संयोजन करने के प्रतिफल स्वरूप न्यासी सदस्य श्री विजयप्रकाशजी मेहता का भी सम्मान किया, न्यास के वरिष्ठ सदस्य श्री वासुदेवजी त्रिवेदी ने पूरे एक माह श्री हाटकेश्वर धाम में अपनी सेवा प्रदान की। इनका भी सम्मान किया गया। अन्नक्षेत्र भोजन की पूरी व्यवस्था की जिम्मेदारी श्री मनीष मेहता की थी। इसके प्रति इनका भी सम्मान किया गया।

हाटकेश्वर धाम में सिंहस्थ अवधि में समाजजनों के ठहरने की व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्था, भोजन में सहयोग आदि के लिये युवा सक्रिय सदस्य श्री संजय जोशी, श्री विशाल नागर, श्री हेमन्त मेहता, श्री अजय नागर, श्री कन्हैयालाल मेहता, श्री दीपक नागर एवं मातृशक्ति श्रीमती अनामिका मेहता, श्रीमती वंदना जोशी (मोना), श्रीमती नीलू मेहता, श्रीमती राधा नागर, श्रीमती रीना नागर, कु.आस्था जोशी, कु.प्रियांशी जोशी का भी सम्मान किया गया।

न्यास द्वारा अपने स्टाफ को भी जिसमें श्री प्रमोद नागर, श्री विनोद कुमार निगम, श्री कैलाश रावल, पं.लोकेन्द्र नागर, श्री सोनू इशान, अनिल पाटीदार, श्रीमती सीमा परिहार, श्री अय्युब, श्री शेरुभाई का भी सेवा के प्रतिफल सम्मान किया।

इसी क्रम में न्यास मंडल का सम्मान भी विजयप्रकाशजी मेहता डॉ.श्री विनोदजी गौतम अध्यक्ष सर्व ब्राह्मण समाज खाचरोद जय हाटकेश सांस्कृतिक मंच के प्रमुख श्री केदार रावल इन्दौर द्वारा किया गया। श्री डॉ.विनोदजी गौतम द्वारा श्री हाटकेश्वर धाम के माध्यम से प्रतिदिन 1 थैला पोहा एवं एकादशी के दिन खिचड़ी एवं खीर श्रद्धालुओं को वितरीत की गई। न्यास द्वारा आपका भी सम्मान किया गया। न्यास की ओर से श्री हाटकेश्वर धाम में अपनी सेवा प्रदान करने वाले हमारे आशीर्वाददाता श्री जमनाप्रसादजी पाठक शुजालपुर वालों का भी सम्मान किया गया। साथ ही श्री मोहनजी शर्मा का विवाह की 25वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में न्यास द्वारा आपको बधाई के साथ सम्मान किया गया। जय हाटकेश सांस्कृतिक मंच द्वारा सुमधुर भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को आनंदित किया। सभी सदस्यों का न्यास द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में 600-700 लोगों ने भाग लेकर प्रसादी ग्रहण की।

अंत में आभार श्री दीपक शर्मा सहसचिव ने माना। कार्यक्रम का संचालन सचिव संतोष जोशी ने किया। सिंहस्थ अवधि में प्राकृतिक आपदा के समय भी बारिश, आँधी तूफान में बाहरी श्रद्धालुओं को श्री हाटकेश्वर धाम में शरण दी गई। भगवान श्री हाटकेश की कृपा से सिंहस्थ आनंद से सम्पन्न हुआ। सभी न्यासी सदस्यों ने भगवान हाटकेश को नमन कर कृतज्ञता प्रकट की। यदि समाजजनों को किसी प्रकार की असुविधा हुई हो तो न्यास मंडल क्षमा प्रार्थी है। जिन्होंने हमें तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया उनके हम आभारी हैं।

न्यास मंडल
श्री हाटकेश्वर धाम

श्री हाटकेश्वर धाम, उज्जैन - दानदाताओं की सूची

श्री मोहनलाल मगनलालजी जालोर (राज.) अहमदाबाद	1100/-
श्री विनायकरावजी मण्डलोई, खण्डवा	1101/-
श्री हाटकेश्वर (युवा) अन्नकुट महोत्सव समिति, उज्जैन	1800/-
श्री महेन्द्र सुपुत्र श्री सुरेन्द्र शर्मा माकड़ोन	25,000/-
डॉ.पं.शिवेशचन्द्र त्रिवेदीजी, उज्जैन	3000/-
श्री जयेश अम्बिका प्रसादजी, गाँधी नगर, गुजरात	500/-
श्री नारायणलाल रुपाजी नागर, भीनमाल (जालोर) राज.	1001/-
श्री अर्वीश भाई भट्ट, अहमदाबाद (गुजरात)	751
श्री मोहनलालजी अहमदाबाद (स्व.श्री नाथालाल पुनमचन्दजी की स्मृति में)	2100/-
श्री कमल कुमार ललितशंकरजी मेहता, मन्दसौर	500/-
श्री आशुतोष मेहता, इन्दौर	1100/-
श्री बालकृष्णजी नागर, उज्जैन	1100/-
श्री अनिल रुद्रसागर, सीहोर	501/-
श्री मोहनलाल मगनलालजी, जालोर	1100/-
श्री ओमप्रकाश नागर, मानपुर	511/-
श्री संतोष रुंगटा, वृन्दावन	501/-
श्री विनोद अग्रवाल, जगन्नाथपुरी	500/-
श्री प्रकृति अजीतलाल कश्यप प्रेरणा मेहता, मुम्बई	1500/-
श्यामाबाई सुभाषचन्द्रजी नागर, इन्दौर	500/-
दीप ज्योति, अगरतला	1000/-
श्री दयाभाई भीकाजी, सरखेड़ा, अहमदाबाद	500/-
श्री अशोक कुमार शर्मा, उदयपुर	1100/-
श्री सुशीलजी नागर, एडव्होकेट, सोनकच्छ	1100/-
श्री वासुदेवजी त्रिवेदी, इन्दौर	1000/-
श्री उमेशजी शर्मा, राऊ	500/-
श्री प्रमोद त्रिवेदी एवं श्री सुमन त्रिवेदी, उज्जैन	501/-
श्री ओमप्रकाश गोरधनजी नागर, जालोर (राज.)	1101/-
श्री महेन्द्र सुरेन्द्रजी शर्मा, माकड़ोन	25,000/-
श्री लव मेहता (माता-पिता श्रीमती सुशीला-चन्दुलालजी मेहता की स्मृति में)	5000/-
डॉ.मुकेश कुमार मेहता, महू	5000/-
श्री संतोष नागर (इलाहाबाद बैंक) (माता-पिता की स्मृति में)	5000/-

श्री मुकेश मेहता एवं श्रीमती मेहता, महू

दयालुता के कार्यों के निरन्तर सम्पादन से ही अमरत्व तक पहुँचा जा सकता है। करुणा और परोपकार के द्वारा पूर्णता की उपलब्धि होती है।

समाजसेवा में अतुलनीय योगदान के लिये जय हाटकेश वाणी परिवार को साधुवाद

जय हाटकेश वाणी परिवार के सम्माननीय सदस्य श्री दीपक शर्मा, श्री पवन शर्मा, श्री मनीष शर्मा द्वारा श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण की रुपरेखा से लेकर आज तक अतुलनीय योगदान प्रदान किया है। विगत सन् 2012-13 में साधारण सभा द्वारा श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण का निर्णय होने के पश्चात् श्री दीपक शर्मा ने न्यास के पदाधिकारियों के साथ अपने वाहन से नागरजनों के गाँव-गाँव में जाकर दान राशि एकत्रित करने में सहयोग प्रदान किया। श्री पवन शर्मा जिन्होंने पूज्य गुरुदेव पं.श्री नागरजी महाराज के प्रतिनिधि के रूप में मध्यस्थ रहकर श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण से लेकर मूलभूत सुविधा जुटाने के साथ इस अवधि में आयी कई समस्याओं का त्वरित समाधान करने में भी अहम भूमिका निभाई। साथ ही श्री हाटकेश्वर धाम में कोई भी कार्यक्रम हो इन्होंने पूरा सहयोग प्रदान किया। श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण के समय दानदाताओं की सूची, इनके फोटो, पूरी जानकारी, कार्यक्रमों की जानकारी तथा श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण का प्रचार-प्रसार श्री हाटकेशवाणी के सदस्य श्री मनीष शर्मा की भूमिका अहम रही है। जय हाटकेशवाणी परिवार द्वारा समाज के कई जरूरतमंदों को चिकित्सा सुविधा में आर्थिक मदद श्रीमती प्रभा शर्मा चिकित्सा फंड से मदद की गई। श्री हाटकेश्वर धाम में प्रथम वर्षगांठ के दिन जो जनरेटर 25 किलोवाट का झा परिवार (ओरियंटल केमिकल वर्क्स, राऊ द्वारा) भेंट किया। वह भी इन्हीं के अथक प्रयासों से संभव हुआ है।

श्री हाटकेश्वर धाम न्यास मंडल जय हाटकेश वाणी परिवार में इस अतुलनीय योगदान के लिये साधुवाद प्रदान करता है तथा भगवान श्री हाटकेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जय हाटकेश वाणी प्रगति के शिखर पर पहुँचे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पुनः धन्यवाद।

-न्यास मंडल श्री हाटकेश्वर धाम

श्री हाटकेश्वर धाम वर्षगाँठ समारोह

धार्मिक आयोजन के साथ समाजजनों का सम्मान, झा परिवार द्वारा जनरेटर भेंट

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मन्दिर न्यास (हरसिद्धिपाल) स्थित श्री हाटकेश्वर धाम की प्रथम वर्षगांठ भगवान हाटकेश्वर की असीम कृपा एवं पूज्य गुरुदेव मालवमाटी के प्रखर संत पं. श्री कमलकिशोर नागर महाराज के आशीर्वाद से 14 जून 2016 मंगलवार को समाजजनों द्वारा मनाई गई। प्रातः 9 बजे भगवान श्री हाटकेश्वर का अभिषेक पूजन-अर्चन-आरती न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' एवं न्यासी सदस्य श्री किरणकांत मेहता द्वारा (सपत्निक) पं.श्री सतीश नागर के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। पश्चात् अतिथिगण सर्वश्री समाजसेवी श्री उमेश झा (ओरियंटल केमिकल वर्क्स) इन्दौर, समाज के गौरव श्री सुनील मेहता (झोनल एस.पी.), श्री राजेश त्रिवेदी 'टमटा', अध्यक्ष (म.प्र. नागर परिषद), श्री डॉ.जी.के. नागर (अध्यक्ष) श्री हाटकेश्वर देवालय न्यास उर्दूपुरा-बंबाखाना, श्री डॉ.प्रदीप व्यास, अध्यक्ष, (म.प्र. ना.परिषद), उज्जैन इकाई, श्री हाटकेश्वर न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' एवं युवा समाजसेवी श्री पवन शर्मा (संपादक चैतन्यलोक इन्दौर) द्वारा भगवान श्री हाटकेश्वर के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कर माल्यार्पण किया गया। इसी क्रम में पूज्य गुरुदेव के स्व.माता-पिता श्री रामस्वरूप जी नागर एवं माता श्रीमती रामप्यारी बाई नागर की प्रतिमा एवं न्यास के संस्थापक अध्यक्ष स्व.श्री गोवर्धनलालजी मेहता के चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया गया। सभी अतिथियों के द्वारा श्री हाटकेश्वरधाम में 25 किलोवाट का जनरेटर श्री झा परिवार द्वारा भेंट किया, उसका विधिवत पूजन अर्चन कर शुभारंभ किया गया। श्री गोविन्द नागर ने स्वागत भाषण में उपस्थित अतिथि एवं स्वजनों का हृदय से स्वागत किया। सचिव श्री संतोष जोशी ने श्री हाटकेश्वर धाम की विगत 1 वर्ष की अवधि की विकास गाथा प्रस्तुत करते हुए उन सभी महान आत्माओं को नमन कर स्मरण किया गया, जिन्होंने इस धरोहर को सहेजकर एवं संवारकर हमें सौंपा था। संस्थापक अध्यक्ष स्व.श्री गोवर्धनलाल मेहता, पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री रामरतन शर्मा के विशेष योगदान के लिए उन्हें स्मरण कर नमन किया, विगत 14 जून 2015 को लोकार्पण का स्मरण पूज्य गुरुदेव पं.नागर महाराज, श्रद्धेय पं.श्री प्रभूजी एवं इनके परिवार को नमन किया आपने श्री हाटकेश्वरधाम एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में हमें भेंट किया। न्यास ने पूज्य गुरुदेव की भावना के अनुरूप श्री हाटकेश्वर धाम में सभी सुविधाएँ जुटाकर समाजजनों को सुविधा प्रदान करने का प्रयास किया है। सिंहस्थ 2016 अवधि में न्यास ने सेवा भावना रख रात-दिन सेवा में तत्पर रहा। न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र नागर द्वारा सिंहस्थ महापर्व अवधि में सभी स्नानपर्व पर अन्नक्षेत्र श्री विजयप्रकाश मेहता (नागदा) समाजसेवी एवं न्यासी सदस्य ने समाजजनों के सहयोग से चलाया गया, इसका आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। तथा रू. 52 हजार की देनदारी जो श्री विजय प्रकाश मेहता ने भगवान श्री हाटकेश्वर एवं होरी हनुमानजी की कृपा से भेंट कर दिए। श्री हाटकेश्वर धाम न्यास द्वारा मुख्य अतिथि श्री उमेश झा का शाल, श्रीफल एवं दुपट्टा तथा श्री हाटकेश्वर धाम का प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया साथ ही श्री सुनील मेहता (झोनल एस.पी.), श्री राजेश त्रिवेदी टमटा एवं सिंहस्थ अवधि में पूरे समय सेवाप्रदान करने वाले न्यासी सदस्य श्री वासुदेव त्रिवेदी खजराना का भी सम्मान किया गया। श्री किरणकांत मेहता न्यासी सदस्य ने आभार प्रदर्शन व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सचिव संतोष जोशी ने किया। महाआरती पश्चात् महाप्रसादी का लाभ समाजजनों ने प्राप्त किया।

श्री हाटकेश्वर धाम में श्री नारायणलालजी भीनमाल (जालोर, राज.) द्वारा हाटकेश्वर जयंती पर स्वयं की ओर से प्रसाद वितरण किया गया, तथा न्यास के लॉकर बनाने हेतु 1001 रुपये भेंट किए। इस अवसर पर न्यास की ओर से प्रतिक चिन्ह एवं दुपट्टे से वेदान्त आचार्य स्वामी श्री चेतनानंद महाराज भूरीवाले (पंजाब) का सम्मान किया गया।

श्री हाटकेश्वर जयंती पर म.प्र. नागर परिषद उज्जैन के द्वारा वरिष्ठजनों का सम्मान किया गया। श्रीमती रमा सुरेन्द्र मेहता का भी सम्मान किया गया।

श्री हाटकेश्वर जयंती पर परिषद के बैनर तले स्व.श्री कपिल मेहता की स्मृति में व्यवसाय एवं सामाजिक सेवाओं के लिए युवा समाजसेवी श्री संजय जोशी का सम्मान, श्री अजय प्रकाश मेहता एवं इनके परिवार द्वारा किया गया।

हाटकेश्वर जंयती पर किया इष्टदेव का पूजन अभिषेक

मक्सी नागर ब्राह्मण परिषद की बैठक भी सम्पन्न

बुधवार को भगवान हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर स्थानीय नागर ब्राह्मण परिषद द्वारा स्टेशन रोड़ स्थित व्यास परिसर में स्थित श्री हाटकेश्वर देवालय में भगवान हाटकेश्वर का पूजन अर्चन एवं अभिषेक किया । इस अवसर पर स्थानीय इकाई की बैठक का आयोजन भी किया गया । कार्यक्रम में मक्सी शाखा अध्यक्ष विजय कृष्ण व्यास, सचिव बालकृष्ण नागर, उपाध्यक्ष अभिमन्यू नागर, शिवनारायण नागर, छगनलाल नागर, शशिकला मेहता, मनोरमा नागर, भावना व्यास, सुलभ व्यास, आदि उपस्थित थे।

बाल व्यास पं. श्री धर्मेन्द्र कृष्ण नागर ने की सिंहस्थ में भागवत कथा

उज्जैन में आयोजित महाकुँभ में अमेरिका रिटर्न बाल व्यास पं. श्री धर्मेन्द्र कृष्ण नागर द्वारा संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा का पाठ किया गया । पं. नागर ने सदुरूदेव श्री गुप्तानंदधाम, दत्त अखाड़ा झोन, बड़नगर रोड़ पर दिनांक 22 अप्रेल से 28अप्रेल तक प्रतिदिन दोपहर 11:30 से 3 बजे तक भागवत कथा का पाठ किया । कथा श्रवण करने के लिये बड़ी संख्या में भक्त उपस्थित थे । कथा समाप्ती के पश्चात प्रतिदिन महाप्रसादी (भण्डारा) भी आयोजित किया गया ।

पं. श्री धर्मेन्द्र कृष्ण नागर, श्री गोपाल गोशाला मो. 8827558908

स्व.श्री प्रो.हरिवल्लभजी नागर इन्दौर की स्मृति में परिवारजनों ने श्री हाटकेश्वर धाम में वाटर कूलर भेंट किया।

सिंहस्थ में पधारे साधु-सन्तों से साक्षात्कार

उज्जैन निवासी श्री राजेन्द्र नागर 'निरंतर' की सुपुत्री कुमारी कल्याणी नागर ने सिटी केबल उज्जैन और एस आर केबल मध्य प्रदेश के निर्देशन में कार्य करते हुए सिंहस्थ 2016में अनेक प्रमुख संतों और महामंडलेश्वरो का साक्षात्कार किया जिसका प्रसारण पूरे उज्जैन और संपूर्ण मध्य प्रदेश में हुआ।कु कल्याणी ने शाही स्नान का सजीव प्रसारण भी किया।

कुमारी कल्याणी नागर ने जीवन प्रबंधन गुरु पं.विजयशंकरजी मेहता, प्रसिद्ध तांत्रिक लेखक, साहित्यकार और डॉक्टर बिंदूजी महाराज, गुरु कार्तिकजी, किन्नर अखाड़े की प्रथम महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, योग माता कीको देवी, पायलट बाबा, श्री रावतपुरा सरकार के साक्षात्कार लिए। ये साक्षात्कार टीवी दर्शकों ने बहुत पसन्द किए। खासकर कु. कल्याणी ने जो गुढ़प्रश्न उपरोक्त संतों के समक्ष उठाए तथा उनका समाधान सर्वत्र प्रशंसनीय रहा।

सिंहस्थ में पं. नागर ने किया भागवत पाठ

मक्सी। नगर के युवा कथावाचक पण्डीत बालकृष्ण नागर ने उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ महाकुंभ में सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का वाचन किया । पं. बालकृष्ण नागर ने पीपली नाका चौराहे के समीप स्थित श्री नीलकण्ठेश्वर महोदव मन्दिर परिसर में दिनांक 13 से 19 मई तक प्रतिदिन दोपहर 12 से 03 के मध्य संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा वाचन किया । प्रतिदिन सेकड़ों भक्तों ने भागवत कथा का रसपान किया ।

-पं. बालकृष्ण नागर
मक्सी, मो. 9826508504

(1) रतलाम नागर समाज के संगीत प्रेमियों के आमंत्रण पर प्रदेश के विभिन्न शहरों से संगीत साधकों द्वारा प्रस्तुति दी गई जिसमें इंदौर से 30 नागर बंधु बस भरकर रतलाम पहुंचे।

(2) सिंहस्थ के पूर्व नागर ब्राह्मण समाज द्वारा युवा भागवताचार्य सुधांशु नागर के पांडाल में भजन प्रस्तुत किए गए।

(3) नागर संतों के पांडाल में भजनांजलि प्रस्तुत किए जाने के क्रम में जय हाटकेश सांस्कृतिक मंच के सदस्यों द्वारा युवा भागवताचार्य सुधांशु नागर महाराज व राम चरित्र मानस मर्मज्ञ पं अजय व्यास के पांडालो में भजन पेश किए गए। साथ ही जीवन प्रबंधन गुरु प. विजयशंकर जी मेहता, पं. राजेश्वर जी नागर व पं. कमल किशोर जी नागर लाहौरी से आशीर्वाद लेकर भजन प्रस्तुति हेतु निवेदन किया गया जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

नागर ब्राह्मण समाज खंडवा द्वारा परम्परानुसार प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला श्री हाटकेश्वर जयन्ती समारोह भव्यरूप से मनाया गया।

भगवान हाटकेश्वर की शोभायात्रा, श्रृंगार, अभिषेक, महाआरती सम्पन्न

श्री हाटकेश्वर वार्ड खंडवा स्थित श्री हाटकेश्वर मंदिर से प्रातः 9 बजे प्रधानआचार्य पं.मदन मोहन दवे द्वारा अध्यक्ष के करकमलों से श्री हाटकेश्वर महादेव की पूजन कराने के पश्चात् पालकी में विराजित कर नगर भ्रमण हेतु शोभायात्रा निकाली गई। रामगंज, बुधवारा, बम्बई बाजार, नगर निगम एवं हरीगंज होते हुए दोप. 12.00 बजे श्री हाटकेश्वर मंदिर पहुँची। गाजे-बाजे, बैनर, पताका आदि से यात्रा की भव्यता देखते ही बनती थी। मार्ग में सीतलामाता का मंदिर, राममंदिर, तिलभांडेश्वर मंदिर, सत्यनारायण मंदिर, अम्बाजी, भवानीमाता एवं गणेश मंदिर के समक्ष श्री हाटकेश्वर महादेव का सभी देवताओं का अभिवादन हुआ। राममंदिर में भानु, कृष्ण एवं नागेश व्यास द्वारा आईसक्रीम, केवल धाम पेट्रोल पंप के यहाँ दशोरा समाज द्वारा शरबत, पं.भगवन्तराव मंडलोई चौक पर श्री गोपाल दीक्षित एवं परिवार द्वारा दूध कोल्ड ड्रिंक तथा हरीगंज में श्री अभिलाष दीवान द्वारा आइस्क्रीम के माध्यम से सम्मान दिया गया।

दोपहर 2.00 बजे मैंने एवं परिवार जन अतुल मंडलोई सौ.चेतना, सुधीर मंडलोई-सौ.श्वेता, दिव्यकांत पंडित-सौ.अपर्णा एवं संजय चौरे-सौ.शुचि ने भगवान हाटकेश्वर का विधिविधान से अभिषेक किया। पश्चात् हवन कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। हवन के यजमान के मैं एवं उपरोक्त चारों युगल थे। प्रधानाचार्य पं.मदन मोहन एवं आचार्यगण पं.गिरिजाशंकर व्यास, पं.भजनशंकर व्यास, पं.तुषार दवे, पं.आशीष मंडलोई, पं.आदित्य व्यास, पं.अरविन्द व्यास एवं विनीत पोत्दार द्वारा विधान कराया गया। लगभग चार घंटे हवन कार्यक्रम चला। इसी बीच पं.गिरिजाशंकर व्यास द्वारा भगवान हाटकेश्वर का श्रंगार किया गया। सहयोग पं.विनीत पोत्दार एवं राजेन्द्र योगी द्वारा किया गया।

लगभग सायं 7.30 बजे पूर्णाहुति, महाआरती एवं प्रसाद वितरण हुआ। पश्चात 8.00 बजे से हम सब यजमानों के आमंत्रण एवं निमंत्रण को स्वीकार करते हुए समस्त नागरजनों ने भोज में सम्मिलित होकर मुझे एवं मेरे परिवार को उपकृत किया।

प्रातः से रात्रि तक के सभी कार्यक्रमों के संचालन एवं सम्पादन में उपाध्यक्ष द्वारा श्री राघवेन्द्रराव मंडलोई, श्री विजयनारायण व्यास, सचिव श्री प्रेमनारायण व्यास, सहसचिव श्री नारायण जोशी, कार्यकारिणी सदस्य श्री प्रभाकर मंडलोई, श्री महेशचन्द्र जोशी, श्रीचन्द्रभानु दीवान, श्री सुरेश मंडलोई, श्री मनोज मंडलोई, श्री बसंत मंडलोई, श्रीमती साधना जोशी, श्रीमती कामिनी पंडित एवं श्रीमती सुमन दवे ने सहयोग दिया। समाज का युवावर्ग अति उत्साहित नजर आया। जिन्होंने समारोह में हर प्रकार से सहयोग देकर श्री हाटकेश्वर जयन्ती को गौरवान्वित किया। कार्यक्रम की शोभा दुगनी हो गई। जब कार्यक्रम में कलकत्ता, मुम्बई, लखनऊ, दिल्ली, वाराणसी, इलाहाबाद, जयपुर, उदयपुर, बड़ोदा, अहमदाबाद, उज्जैन, इन्दौर सहित कई शहरों से रिश्तेदार सम्मिलित हुए। पं.संतोष व्यास इन्दौर एवं श्री महेश्वर मंडलोई भोपाल विशेष अतिथि थे।

-देवीदास पोत्दार अध्यक्ष

एक बार एक कवि के बेटे का स्कूल में एडमीशन करवाया गया।
टीचर ने पूछा- व्हाट इज नाऊन??
स्टूडेंट ने जवाब दिया- अर्ज करता हूं...
कुत्ता भी होता है अपनी गली में किंग,
वाह...वाह....
कुत्ता भी होता है अपनी गली में किंग,
नाउन इज ए नेम ऑफ एनी पर्सन,
प्लेस ऑर थिंग...।

नागर युवा परिषद शाजापुर द्वारा सिहंस्थ में पधारे संतो का अभिनन्दन

सिहंस्थ २०१६ में नागर समाज के संतो एवं विद्वानों ने भी अपने अपने केम्प लगाकर प्रवचनों की गंगा बहाकर एवं अन्नक्षेत्र संचालित कर सेवा कार्य किया।

शाजापुर नागर युवा परिषद के अध्यक्ष संजय नागर एवं युवा परिषद के वरिष्ठ साथी राजेश नागर, सुरेन्द्र नागर, राजेन्द्र व्यास, संजय नागर (पूर्व पार्षद), प्रसुन मेहता, विवेक मेहता, दिलीप नागर, अनील नागर, दिलीप नागर(पंचोला), जगदीश नागर, गजेन्द्र शर्मा, अजय व्यास(राम), मनोज नागर अभयपुर आदि साथियों ने नागर संतो सर्वश्री पं.विजय शंकर जी मेहता, पं.गोविंदजाने विनोदजी नागर, पं.सुधांशु महाराज, पं. मुरलीधरजी नागर, पं. बालकृष्णजी नागर , पं. सतीशजी नागर, पं.अजय व्यास, प. कमल किशोरजी नागर लाहोरी, प. घनश्यामजी भारद्वाज, पं. राजेन्द्रजी नागर के केम्प में जाकर शाल-श्रीफल भेंट कर अभिनंदन किया एवं आशीर्वाद प्राप्त किये। नागर युवा परिषद शाजापुर के इस अभिनव प्रयास को सभी संतो ने सराहा एवं भरपूर आशीर्वाद प्रदान कर सभी सदस्यों को सम्मानित भी किया।

माँ अम्बे की नवीन मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा

स्थानीय नागर ब्राह्मण समाज धर्मशाला हरायपुरा शाजापुर मे सन् १९९२ में स्व. पं. श्री हरिवल्लभजी पंचोली द्वारा अपनी पत्नि स्व. शांतादेवी की स्मृति में माँ अम्बे की मूर्ति स्थापित की गई थी जो कि समय के थपेडों से क्षरित होकर खण्डित हो गई थी। खण्डित मूर्ति की पूजा शास्त्रोक्त नहीं है। इस पीडा से व्यथित हो कर नागर युवा अध्यक्ष श्री संजय नागर एवं श्री प्रसुन मेहता ने नवीन मूर्ति की स्थापना करने की ठान ली, अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास की सहमति के बाद समस्त ट्रष्टियों एव वरिष्ठजनों की राय से इस कार्य को गति मिली, माँ अम्बे की नित्य पूजा करने वाले भाई परमानन्दजी नागर (मक्सी) ने यह प्रण किया कि नवीन अम्बे मूर्ति उनके परिवार द्वारा समर्पित की जावेगी, देखते ही देखते श्री परमानन्द नागर द्वारा अम्बे माँ की नवीन मूर्ति उज्जैन से रूपये २१०००/- (इक्कीस हजार) में खरीदकर समाज को समर्पित की दिनांक १८.०४.२०१६ को जलादिवास, फलादिवास, वस्त्रदिवास, घृतादिवस तथा अन्नादिवास किया गया। दिनाक १९ अप्रैल २०१६ को संगीतमय सुन्दर काण्ड का भव्य आयोजन किया गया, दिनांक २०.०४.२०१६ को हाटकेश्वर जयंति के दिन पं. रमेश रावल के मुख्य आचार्यत्व मे पं. अनिल नागर, पं. संतोष नागर, पं.मनीष रावल, पं.नवीन नागर, पं.उमेश व्यास आदि ने विधि विधान पूर्वक नवीन मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा की अभिषेक एव पूजन के मुख्य यजमान श्रीमती शकुंतला नागर-श्री परमानन्द ने भक्ति भाव से संपूर्ण कार्य संपन्न किया। प्राचीन मूर्ति को श्री कैलाश मेहता एवं श्री वीरेन्द्र भाई द्वारा भीषण गर्मी के बाबजूद ओंकारेश्वर जाकर माँ नर्मदा मे विसर्जित किया गया। उक्त प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम में समाज के निम्नानुसार स्वजनो के द्वारा खुले हाथों से दान किया गया।

प्राणप्रतिष्ठा हेतु दानदाताओं की सूची-

(१) श्री डॉ. मनोहरलाल शर्मा बेरछा- २५००, (२) श्री सुरेश दवे मामा- २१००, (३) श्री अनिल नागर चाचोडा - २००१, (४) श्री वीरेन्द्र व्यास- ११००, (५) श्री लक्ष्मीनारायण नागर (राज नगर)-११००, शाजापुर, (६) श्री विवेक मेहता- ११००, (७) श्री संजय नागर (शिक्षा विभाग)- ११००, (८) श्री अरूण मोहिनीकांत व्यास- ११००, (९) श्री परमानंद नागर- ११००, (१०) श्री सजंय नागर (महिला एवं बाल विकास)- ११००, (११) श्री लोकेन्द्र नागर- ११००, (१२) श्री हेमन्त दुबे- ११००, (१३) श्री राजेन्द्र नागर- ११००, (१४) श्री अनिल नागर (जय माता दी)- ११००, (१५) श्री संजय नागर (भाजपा नेता)- ११००, (१६) श्री राजेन्द्र प्रकाश व्यास- ११००, (१७) श्री ओमप्रकाश नागर (दुपाडा)- ११००, (१८) श्री मधुरा प्रसाद शर्मा-११००, (१९) श्री दिलीप नागर (पंचोला)-११००, (२०) श्री सुनील नागर (भवन स्कूल)- ११००, (२१) श्री लक्ष्मीनारायण नागर(अभयपुर)- ११००, (२२) श्री बालकृष्ण नागर (मक्सी)-११००, (२३) श्री डा. अशोक नागर-११००, (२४) श्री बी.एल मेहता-११००, (२५) श्री लक्ष्मीकांत नागर-११००, (२६) श्री कैलाश मेहता-११००, (२७) श्री प्रेम पांचाल- ११००.

योग साधना से स्वस्थता का जीता जागता उदाहरण

86 वर्षीय ए.के.रावल

योग से रोग निवारण केन्द्र के संचालक ए.के. रावल पिछले 38 वर्षों से योग साधना से हजारों पुरुष, महिलाओं एवं नौजवानों को स्वस्थ रहने के गुण सिखा रहे हैं। योग का जीता जागता उदाहरण स्वयं ए.के. रावल है, जो 86 के उम्र में भी स्वस्थ्य रूप से न केवल अपना जीवन गुजार रहे हैं, वरन अनेक लोगों को योग सिखा रहे हैं, और उन्हें स्वस्थ कैसे रहे इसकी शिक्षा भी दे रहे हैं।

योग की शुरुआत 38 वर्ष पूर्व बाम्बे हास्पिटल के योग रिसर्च विशेषज्ञ ब्रिगेडियर डॉ.के.के. दाते से हुई थी। उन्हीं की प्रेरणा से योगाभ्यास शुरु किया था। डॉ.दाते द्वारा बीमारी के अनुसार दवाईयों के साथ योग, प्राणायाम, ध्यान श्वासन, योग निद्रा का भी अभ्यास कराया जाता है। इन प्रक्रिया से आश्चर्यजनक परिणाम भी मिलते थे। इसी वजह से रावल साहब की रुचि बढ़ी और योग से रोग निवारण केन्द्र की स्थापना की।

अभी तक स्कूल, शासकीय कार्यालयों एवं अन्य संस्थानों में 52 योग शिविर लगा चुके हैं। करीब 1,29,000 महिला, पुरुषों को योग करने का अभ्यास, करा कर ट्रेंड करा चुके हैं। रक्तचाप, मोटापा, मधुमेह, तनाव, अनिद्रा, हृदयरोग, अपवंचन, वायु विकार, गर्दन, जोड़ों, कमर, घुटनों का दर्द, गठिया, थाईराईड, आर्थोराइटिस, साईटिका, अस्थमा, पाईल्स, सिजोफ्रोबिया, मनोवैज्ञानिक, बीमारियों से ग्रसित लोगों ने योग क्रियाओं द्वारा स्वास्थ्य लाभ उठाया और स्वस्थ रहने की योग क्रियाएं सीखीं। कोई भी व्यक्ति यदि सिर्फ 45 मिनट योग करे तो शरीर, मन, मस्तिष्क स्वस्थ रहता है। ए.के. रावल ने योग पर एक किताब लिखी है। योग निद्रा एवं हंसने का एक कैसेट भी बनाया गया है। आप शहर के अनेक प्रतिष्ठित क्लबों के सदस्य भी हैं। इन्होंने कुल 52 केम्प लगाये। जिनमें हजारों लोगों ने योग प्रशिक्षण का लाभ लिया।

हाटकेश्वर जयंती धूमधाम से मनी

राऊ में हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर पं.विनोद नागर (सामगी) द्वारा पूजन, अभिषेक सानन्द सम्पन्न कराई गई। जिससे सर्वश्री मणीशंकर-सौ. भगवती नागर, श्री बसन्त-सौ. अर्चना शर्मा, श्री अनिल-सौ.सुनीता नागर, श्री हेमन्त-सौ.किरण शर्मा, श्री मनोज-सौ.रंजना नागर द्वारा जोड़े से अभिषेक किया गया। बहनों द्वारा भी अभिषेक किया गया, जिसमें सौ. माया गिरजाशंकर नागर, सौ. विजयलक्ष्मी संजय नागर, श्रीमती पुष्पा व्यास, श्रीमती किरण नागर, श्रीमती शकुन्तला शर्मा, सौ.ज्योति विनोद शर्मा, सौ.राधिका नागर, श्रीमती पार्वती सौ.कुसुम मेहता सौ.रुपिका अतुल व्यास, सौ.पारुल गोपीनाथ नागर, सौ.सोनु आशीष नागर साथ ही दशोरा सदस्य भी उपस्थित थे। प्रसाद में सुस्वादू व्यंजन का आनन्द सभी ने लिया। - **सखी सहेली ग्रुप, राऊ**

नव-चेतना

नव पल्लव
आ चुके हैं प्रिया
वसुधा भी
कामिनीवनित
हो चुकी हैं।
सरिता, रवि की
हेम-रश्मि से
तरुणाई है।
और,
तुम भी
चिरयोवन को
प्राप्त कर चुकी हो।
छा चुकी है
सर्वत्र
नव चेतना

-मनीष रावल
शाजापुर (म.प्र.)
मो. 8109487593

अभिजीत व्यास का सम्मान

कला एवं संस्कृति को समर्पित राष्ट्रीय मासिक पत्रिका कला संसार द्वारा आयोजित कलाश्री सम्मान 2015 श्री अभिजीत व्यास को दिया गया। यह सम्मान समाजोपयोगी कार्य करने तथा अविस्मरणीय योगदान हेतु आय.जी. इन्दौर रैंज विपीन माहेश्वरी द्वारा प्रदान किया गया। अभिजीत व्यास नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य पं.विश्वनाथ व्यास के सुपुत्र हैं। इस उपलब्धि पर समस्त नागर समाज द्वारा बधाई।

यश त्रिवेदी का सुयश

यश त्रिवेदी (सुपुत्र- ललित-सौ.किरण त्रिवेदी) महिदपुर माध्यमिक शिक्षा मंडल की दसवीं की परीक्षा में समस्त विषयों में विशेष योग्यता अर्जित कर 600 में से 545 अंक 91 प्रतिशत अर्जित किए। यश त्रिवेदी भविष्य में डॉक्टर बनकर जनसेवा करना चाहते हैं।

कु.प्रगति व्यास को 90 प्रतिशत अंक मिले, बधाई

नागर ब्राह्मण समाज का गौरव तथा समाज का नाम रोशन करने वाली होनहार, नागर ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास की पोती तथा युवा समाज सेवी श्री अजय व्यास (राम) की सुपुत्री- कु.प्रगति व्यास (पलक) ने केन्द्रीय विद्यालय शाजापुर से 10वीं (सीबीएससी बोर्ड) की परीक्षा में 9 सीजीपीए में 90 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण कर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। बधाई एवं शुभकामनाएँ।

मंगल परिणय

स्व.श्रीमती लता स्व.श्री राजेन्द्रजी रावल भोपाल के सुपुत्र चि. प्रवीण रावल का विवाह श्रीमती गीता हरीशचन्द्र पाण्डे भोपाल की सुपुत्री सौ.कां.दिव्या के साथ 22 अप्रैल 2016 को भोपाल में सम्पन्न हुआ।

यज्ञोपवीत सम्पन्न

वाराणसी सिद्धेश्वरी निवासी चि.यश सुपुत्र श्रीमती रेणु-श्री अजीतराय बलदेवराम दीक्षित का यज्ञोपवीत संस्कार 11 अप्रैल 2016 को वाराणसी में सम्पन्न हुआ।

जन्मदिन की बधाई

कु.शिवानी-सत्यम जोशी पोर्टलैंड (अमेरिका) 1-6-16
कु.वंदना पी.जोशी, इन्दौर 15-6-16
डॉ.श्रीमती रेणुका प्रदीप मेहता, इन्दौर 24-6-16
जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार इन्दौर महू
-पी.आर.जोशी, इन्दौर

रेखा मिश्रा (भोपाल) - 6 जून, वीणा दुबे (अमेरिका) 9 जून
चरित्र मेहता (हैदराबाद) 21 जून, चित्रांग जोशी (इन्दौर) 29 जून
-गायत्री मेहता, इन्दौर

अथर्व नागर (हनी)

सुपौत्र- श्री हरिराम नागर
सुपुत्र- श्री हर्ष नागर का चौल (मुंडन) संस्कार 15 अप्रैल को इलाहाबाद में सम्पन्न हुआ।
श्रीमती सुरेखा स्व.श्रीराम पोत्दार 25 जून
कु.काँची प्रज्ञा-आशित दीक्षित - 27 जून

दिव्यांश नागर

सुपुत्र- बालकृष्ण-सौ.चंचला नागर
पठानकोट- 2 जून
समस्त नागर एवं रावल परिवार बड़ागाँव, उज्जैन

आयुषी व्यास (चिनू) 23 जून

के.आर. व्यास एवं वंदना व्यास
व्यास परिवार, खंडवा

प्रथम वर्षगांठ

रुद्राक्ष नागर 27 जून
(सुपुत्र-संतोष सौ.कविता)
मनोरमा नागर (दादी)
-शुभाकाँक्षी समस्त परिवार
झालरापाटन एवं नागदा

लवी नागर सुपुत्री-विशाल शंकर नागर एवं छवि नागर,

सुपौत्री- रमाशंकर नागर को द्वितीय जन्म दिन 22 जून की बधाई
कमल कुमार त्रिवेदी - 2 जून

पोत्दार परिवार खंडवा के **श्रीमती उर्मिला दिनेश पोत्दार** व श्रीमती रूपा गिरीश पोत्दार को विवाह वर्षगाँठ 8 जून की बधाई। श्रीमती चंदा महेश पोत्दार, श्रीमती सुरेखा पोत्दार, श्रीमती कुसुम वरुण पोत्दार, सुषमा अरुण पोत्दार, पुत्री व दामाद श्रीमती दीप्ति विवेक जोशी, श्रीमती तृप्ति नवीन व्यास, श्रीमती प्रज्ञा आशीष दीक्षित, श्रीमती पूजा विशाल पांडे, श्रीमती पूनम नागर आदि।

विवाह वर्षगांठ

नरेन्द्र-सौ.गायत्री मेहता इन्दौर - 5 जून
सुरेश-सौ.दुर्गा जोशी इन्दौर - 6 जून
-शक्ति नागर, खंडवा

विवाह वर्षगांठ

आस्था तमीशजी दशोरा 19 जून
दिप्ती उत्पलजी दशोरा 25 जून

सांदीपा-सौ.पिंकी को विवाह वर्षगांठ की बधाई एवं शुभकामनाएँ

शुभाकाँक्षी- समस्त भट्ट, मेहता परिवार बसवां जिला दौसा, कामवन जिला भरतपुर (राज.), शाजापुर

कु.दीपाली, कु. आस्था एवं चि. प्रतीक की उपलब्धि

दीपाली नागर

आस्था नागर

प्रतीक नागर

दीपाली नागर, आस्था नागर, प्रतीक नागर सुपुत्री-सुपुत्र : अरुप-संगीता नागर ग्राम दड़ौली जिला नीमच (म.प्र.) ने कक्षा 5वीं में 87.79 प्रतिशत कक्षा 4थी में 89.82 प्रतिशत यूकेजी में 83.80 प्रतिशत से ए ग्रेड प्राप्त की। सनफ्लावर इंग्लिश मीडियम स्कूल मोरवन से उत्तीर्ण होने पर दादा-दादी जयप्रकाश-कमला नागर, चाचा-चाची प्रेमप्रकाश-रीना नागर, फूफाजी-बुआ- धर्मेन्द्र-ज्योति शर्मा, दीपक शर्मा (रतलाम), सफलता पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना।

प्रेषक- जय प्रकाश नागर
दड़ोली मो. 9165059666

मोहित नागर की बड़ी सफलता स्टेट मेरिट में दसवाँ स्थान पाया

मन में दृढ़इच्छा शक्ति हो तो कोई लक्ष्य कठिन नहीं। हर मुकाम हासिल किया जा सकता है। ऐसा ही जज्बा और दृढ़इच्छा शक्ति रामसीन के आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र मोहित नागर ने दिखाई है। रामसीन जैसे छोटे से कस्बे के निवासी इस छात्र ने न केवल जिले की मेरिट में स्थान पाया, बल्कि स्टेट मेरिट में भी 10वाँ स्थान हांसिल कर यह साबित कर दिखाया है कि मन में यदि लक्ष्य हासिल करने का जज्बा हो तो संसाधन कोई मायने नहीं रखते। मोहित के पिता प्रकाश कुमार की रामसीन में ही स्टील की दुकान है और माता शारदा नागर गृहिणी है। एक छोटा भाई है जो अध्ययन कर रहा है और दो बहन है जिनकी शादी हो चुकी है। खबर लगते ही मोहित के घर पर बधाईयाँ देने वाले पहुँचने शुरु हो गए।

स्टेट बैंक में नियुक्ति

चि.चन्दन नागर सुपुत्र- सरोज नरेन्द्र नागर (कायथा) ऋषि नगर उज्जैन की नियुक्ति स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद (जिसका विलय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में प्रस्तावित है) में जुनियर एसोसियट के पद पर हुई है। वह वर्तमान में नान्देड (महाराष्ट्र) में पदस्थ है। चि.चन्दन नागर द्वारा अपनी सेवा की छः माह की अवधि में ही बैंकिंग डिप्लोमा परीक्षा जे.ए.आई.आई.बी. प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण कर ली है। चि. चन्दन नागर कायथा निवासी स्व.श्री रामगोपालजी नागर के पोत्र एवं पीपलरावा निवासी श्री सुरेन्द्रजी व्यास के नाती हैं। समाज उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

-मनोज व्यास
सांवरिया परिसर, उज्जैन
मो. 9926333647, 9425986763

शशांक नागर को सफलता

शशांक नागर सुपुत्र भरत कुमार नागर सुमेरपुर ने सी.ए. की परीक्षा श्रेष्ठ अंकों से उत्तीर्ण कर दुनिया की बड़ी चार कंपनियों में से एक ई एंड वाय बैंगलोर में चयनित होकर नागर समाज को गौरवान्वित किया। इस अवसर पर समस्त परिवार, रिश्तेदारों एवं समाजजनों ने बधाई दी है।

कु. हर्षाली को सुयश

कु. हर्षाली मेहता सुपुत्री श्रीमती मंजु-जितेन्द्र मेहता निवासी गुलमोहर कॉलोनी, रतलाम ने वर्ष 2015-16में कक्षा 10 वी सीबीएसई परीक्षा सेंट जोसफ कान्वेंट स्कूल, रतलाम से 8.2 सी.जी.पी.ए. से उर्त्तीण की। परिजनो एवं इष्ट मित्रों की और से बधाई।

-सुशील नागर, रतलाम

नव सृजन लोकमंच इन्दौर द्वारा सिंहस्थ 2016 के अवसर पर साहित्य महाकुंभ के अन्तर्गत काव्य संग्रह जय महाकाल @ सिंहस्थ में रचनात्मक सहयोग देने के उपलक्ष्य में आचार्य पं.नंदकिशोरजी रावल (सामगी वाले) की पुत्रवधु एवं श्री हरिनारायण की सुपुत्री श्रीमती चारुमित्रा, उमाशंकर नागर खजराना को सिक्का एवं सम्मान पत्र दिया गया।

श्री चम्पकलालजी जोशी (मुम्बई-अहमदाबाद) के प्रपौत्र हरित (सुपुत्र-देवांग जोशी) का मुंडन समारोह 2 जून 2016 को बहुचरा माता मंदिर में सम्पन्न हुआ। जिसमें अनेक परिजनों, रिश्तेदारों एवं समाजजनों ने हिस्सा लिया। बधाई।

सुखद-शुभम
जन्मदिन की बधाई
विशद् व्यक्तित्व-समाज प्रणेता सुप्रिय **श्री आशीष त्रिवेदी**
3 जुलाई 2016
संरक्षक- म.प्र. नागर परिषद् शाखा इन्दौर, अध्यक्ष- शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट आत्मीय शुभकामनाओं के साथ जोशी, जया नागर, जाधव, तिवारी, परिवार
-पी.आर. जोशी
उषा नगर, इन्दौर

धीरज रावल
26-7-1985
शुभाकांक्षी- दर्शना (सिद्धि)
पत्नी- प्रीति रावल

वैभवी व्यास
26 जुलाई
शुभाकांक्षी- दर्शना, वारा, निकुंज, गोलू एवं परिवार

चि. उत्कर्ष नागर
(सुपुत्र-सौ.दीपिका-जितेन्द्र नागर)
देवास, 6 जुलाई
मो. 9827678692

कु.विहा शर्मा
(सुपुत्री- सौ.रीना-अतुल शर्मा), इन्दौर
31 जुलाई

दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ का यादगार दिन
श्री पवन-छाया भट्ट (12 जुलाई)
प्रभू नगर, इन्दौर
शुभाकाँक्षी- नागर परिवार देवास
मो. 9827678692

जन्मदिन की बधाई

चि. देव शर्मा

दिनांक
30–6–2016

(सुपुत्र– सौ.प्रीति–संजय शर्मा)
शुभाकाँक्षी– श्रीमती सुमन शर्मा, देवास (दादी)
सौ भगवती–गोविन्द नागर (नानी–नाना)
मंदसौर मो. 9893865642

पुत्रिरत्न
प्राप्ति पर बधाई

आशी नागर

सौ.कामना एवं आशीष नागर कोपुत्रीरत्न प्राप्ति पर हार्दिक बधाई
आशी नागर जन्मदिनांक 19 जून 2016
शुभाकाँक्षी– साधना–अशोक नागर (दादी–दादा), संध्या–मंकोड़ी (नानी–नाना), व्योमा–मितेश नागर (बड़ी मम्मी–बड़े पापा), सत्यम (मामा), परी (दीदी) एवं समस्त नागर एवं मंकोड़ी परिवार.

बधाई बधाई बधाई

सारव (नितिन, रुपाली) नागर
को प्रथम जन्मदिवस पर बहुत बहुत बधाई

HAPPY BIRTHDAY

SAARAV

06 जुलाई 2016

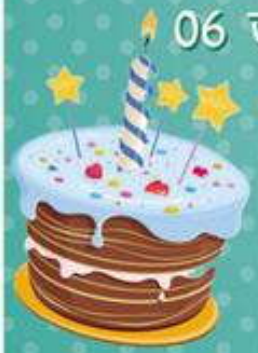

Mob. 9827677793

पुलकित है मन आज पल खुशियों का आया
सारव के जन्मदिवस पर हर तरफ उल्लास छाया

नागर परिवार भाटगली, उज्जैन
नागर परिवार (चक्कीवाला) इंदौर, राऊ

वैवाहिक (युवक)

हर्ष नागर (मांगलिक)
जन्मदि. 5-7-1989
(गौत्र- कश्यप)
(1.55 ए.एम.) कद- 5'8"
शिक्षा- एम.बी.ए. (मार्केटिंग)
कार्यरत- टेरेटरी मैनेजर, एशियन पेन्ट्स देहरादून
सम्पर्क- लक्ष्मण नागर
मो. 09450960140

प्रतीक विपुल शंकर मेहता
जन्मदि. 15-12-1987
स्थान- वाराणसी
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए.
कार्यरत- असिस्टेंट ब्रांड मैनेजर इमामी
सम्पर्क-

शुभांग शर्मा
जन्मदि. 6-7-1991
समय- 7.20 शाम
शिक्षा- बी.ई. साफ्टवेअर इंजीनियर
कार्यरत- बैंगलूरु में प्रतिष्ठित कंपनी में
सम्पर्क- मो. 9008653868

अंकित अश्विनी नागर
जन्मदि. 24-06-1987
समय- सायं 5 बजे, इलाहाबाद
शिक्षा- एम.कॉम., एल.एल.बी., बी.एड.
कार्यरत- लेक्चरर देवप्रयाग स्कूल एंड कॉलेज
सम्पर्क- श्रीमती मंजू नागर इलाहाबाद
मो. 09935660729

कल्पित जनार्दनराय नागर
जन्मदि. 23-1-1986
समय- 11.45 पी.एम., बांसवाड़ा
कद- 5'7", गौत्र- वत्सपाल
शिक्षा- बी.कॉम., डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट
सम्पर्क- 02962-245036, 09414307094

रोहित अशोक गुरु
जन्मदि.24-5-1987
समय- 6 पी.एम., खंडवा
गोत्र- कश्यप, कद- 5'9"
शिक्षा- बी.ई.
कार्यरत- टेस्ट एनॉलिस्ट, बार्कलेज पुणे, सम्पर्क- खंडवा
मो. 9406852088, 9923349905

रितेश अरुण शंकर याज्ञनिक
जन्मदि. 9-8-1989
समय- 8.40 ए.एम., नई दिल्ली
कद- 5'11
शिक्षा- बी.टेक. (ईसीई)
कार्यरत- केन्द्रीय सचिवालय सेवा
सम्पर्क- भगवतगढ़(सवाई माधोपुर)
मो.8764076354, 9667290857

अनुपम अशोक मेहता
जन्मदि. 14-10-1987
समय- 14.40, जयपुर
कद- 6'2", वजन- 86
शिक्षा- बी.एस.सी. कम्प्यूटर साईंस, मेथ्स डिप्लोमा मल्टीमीडिया एवं एनिमेशन
कार्यरत- सीनियर आर्टिस्ट सुमो गेमिंग पुणे
सम्पर्क- जयपुर मो. 09414783285, 09414853493

रोहित शरद जोशी
जन्मदि. 25-9-1986
स्थान- इन्दौर
कद- 5'8"
शिक्षा- बी.सी.ए., एनीमेशन विशेषज्ञता
कार्यरत- बिजनेस (एनिमेशन स्टूडियो)
सम्पर्क- मो. 8989699496
फोन 0731-2436425

वैवाहिक (युवती)

श्रेया नागर
जन्मदि. 4-5-1986
समय- 12.29, लखनऊ (उ.प्र.)
कद- 5'4"
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए.
कार्यरत- यस बैंक

जूही मकरंद नागर
जन्मदि. 27-1-1986
समय- 11.30 ए.एम., इलाहाबाद
कद- 5', वजन- 48
शिक्षा- पोस्ट ग्रेज्यूएट, पी.आर. विशेषज्ञता
कार्यरत- पी.आर. एक्जीक्यूटीव इन एमएनसी, नईदिल्ली
सम्पर्क- 7309319020

कृति नागर
जन्मदि. 19-5-1988
समय- 11.48 ए.एम., इलाहाबाद
कद- 5'2', वजन- 47
शिक्षा- पोस्ट ग्रेज्यूएट (इलेक्ट्रॉनिक्स)
कार्यरत- सेल्फ एम्पलायड एंड सीएक्सओ कार्पोरेट फिल्म निर्माण
पेरेन्ट्स मकरंद नागर मो. 7309319020

अनंता अभयराम नागर
जन्मदि. 17-6-1990
समय- 9.20 ए.एम., बुरहानपुर (म.प्र.)
कद- 5'1"
शिक्षा- आय.एस.सी., बी.टेक. (मैकेनिकल), एम.बी.ए.
कार्यरत- यार्डी कंपनी, पुणे
सम्पर्क- आगरा मो. 9897517271

अर्पणा अरुणशंकर नागर (मांगलिक)
जन्मदि. 19-2-1993
समय- 13.50, स्थान सवाई माधोपुर (राज.) कद- 5'7"
शिक्षा- बी.ए. (इंग्लिश) बी.एस.टी.सी. आईटीईटी, सीटीईटी, एम.ए. (अध्ययनरत)
सम्पर्क- मो. 8764076354, 9667290857

प्रिया भुवनेश्वर भट्ट
जन्मदि. 4-8-1988
समय- 8.30 पी.एम., जयपुर, कद- 5'4"
शिक्षा- बी.एस.सी., एम.एस.सी. टेक
कार्यरत- एक्साईज इंस्पेक्टर बैंगलोर केन्द्रीय
सम्पर्क- 9460547800, 9414456100 कर्मचारी
(नोट- केन्द्रीय कर्मचारी को प्राथमिकता)

भावना
जन्मदि. 19-6-1986, समय- 11.30 एएम
शिक्षा- एम.बी.ए., कद- 5'3"
कार्यरत- दिल्ली में
सम्पर्क- 08130586374

डॉ.खुशबू मेहता
जन्मदि. 6-9-1984
समय- 12.50 पी.एम., मेहसाना
शिक्षा- एम.डी. एम.एस. (गायनिक)
कार्यरत- एम्स दिल्ली
सम्पर्क- मो. 9426056038, 9825270338

वैवाहिक (युवक)

लोकेश शरद के. नागर
जन्मदि. 8-05-1986
प्रातः 5.30, मक्सी
जिला शाजापुर
कद- 5'8"
शिक्षा- बी.एस.सी., एम.बी.ए.
कार्यरत- राष्ट्रीयकृत बैंक (युको बैंक) में
सम्पर्क- उज्जैन फोन 0734-2524052, मो. 8120412575, 898949512

विश्वास सुशील पाठक
जन्मदि. 19-3-1991
शिक्षा- बी.टेक. कम्प्यू. साईंस
कद- 5'8"
कार्यरत- एक्साईज डिपार्टमेन्ट (शासकीय सेवा)
सम्पर्क- 9782968279

शशांक भरत कुमार नागर
जन्मदि. 1-10-1990,
(3.15 पी.एम.),
सुमेरपुर (पाली) राज.
शिक्षा- सी.ए.
कार्यरत- E & Y बैंगलोर
वार्षिक आय- 8.50 हजार वार्षिक
सम्पर्क- सुमेरपुर
मो. 9414883232, 7275692408

पिंकेश भगवतीलाल भट्ट
जन्मदि. 21-7-1982
समय- 10.30 पी.एम.,
राऊ (इन्दौर), गौत्र- आलुम्भान
कद- 5'6"
शिक्षा- बी.एस.सी. इन मैथ्स
कार्यरत- बी.एस.एम. इंडसइंड बैंक
सम्पर्क- रतलाम मो. 9907512659, 9424020501

पंकज विनोद जोशी
जन्मदि. 11-12-1988
समय- 8.37 पी.एम, उज्जैन
कद- 5'8"
शिक्षा- एम.बी.ए. (फायनेंस एंड मार्केटिंग)
कार्यरत- ऑफिसर (आयएसएफसी)
सम्पर्क- मो. 9827012224, 9993690910

हार्दिक स्व.गिरीशचन्द्र पंड्या
जन्मदि. 12-7-1983
समय- 3.05 दोपहर, खण्डवा
कद- 5'7"
शिक्षा- एम.कॉम. पीजीडीसीए
कार्यरत- एम.आय.टी. कॉलेज उज्जैन
सम्पर्क- 0734-2517824, 09227221343

रितेश अरुण शंकर नागर
जन्मदि. 9-8-1989
समय- 8.40 पी.एम., नईदिल्ली
कद- 5'11"
शिक्षा- बी.टेक. (ईसीई)
कार्यरत- केन्द्रीय शासकीय नौकरी सहा. अनु. अधिकारी रक्षा मंत्रालय (केन्द्रीय सचिवालय सेवा) नईदिल्ली
सम्पर्क- 8764076354, 9667290857, 8764249492

सुमित वाणी विलास जोशी
जन्मदि. 4-6-1986
शिक्षा- बी.कॉम. एम.बी.ए., पीजीडीसीए
कार्यरत- प्रायवेट जॉब
सम्पर्क- 8827598660

वैवाहिक (युवती)

भावना भट्ट
जन्मदि. 27-3-1989
(समय 1.35 ए.एम.,
बांदीकुई (दौसा)
शिक्षा- प्रिप्रेशन नेट एंड पी.एच.डी.
सम्पर्क- 7297975647

पूजा विनोद जोशी (मांगलिक)
जन्मदि. 14-4-1984, कद- 5'3"
शिक्षा- एम.सी.ए.
कार्यरत- एमएनसी कम्पनी में सीनियर साफ्टवेयर इंजीनियर
सम्पर्क- मो. 8959052848, 8103436252

प्रियंका वाणी विलास जोशी
जन्मदि. 19-7-1988
शिक्षा- ग्रेजुएट होम साईंस
गोत्र- कोशल्य
कार्यरत- प्रायवेट स्कूल में
कद- 5'6"
सम्पर्क- 8827598660

उर्वशी नागर
जन्मदि. 4-11-1990
समय- 12.40, दोपहर,
नेपानगर, कद- 5'
शिक्षा- एम.बी.ए. लास्ट सेम
सम्पर्क- मुकेश नागर
मो. 9425496072, 9165874128

निकिता शैलेन्द्र कुमार मंडलोई
जन्मदि. 24-7-1988
जन्म समय 4.20 पीएम,
जबलपुर
शिक्षा- एम.कॉम., पीजीडीसीए
सम्पर्क- 09329003583, 07614064500

अर्पणा अरुण शंकर नागर
जन्मदि. 19-2-1993
समय- 13.50, सवांई माधोपुर
कद- 5'7"
शिक्षा- बी.ए. (इंग्लिश), बी.एस.टी.सी., आय.टी.ई.टी., सी.टी.ई.टी, एम.ए. (अध्यय.)
सम्पर्क- मो. 8764076354, 9667290857

सोनाली मुकेश त्रिवेदी
जन्मदि. 3-11-1989
समय- 6.42 ए.एम., रतलाम
कद- 5'5"
शिक्षा- बी.ई. (सीएस)
कार्यरत- सीनियर एनालिस्ट साफ्टवेयर इंजीनियर एसेंचर पुणे
सम्पर्क- इन्दौर मो. 9424551656, 8349246326

नागर महिला मंडल की बैठक 23 जुलाई को

नागर महिला मंडल की दो महीने की छुट्टी के बाद जुलाई माह की मासिक बैठक 23 जुलाई को अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास पर 3.30 बजे आयोजित होगी। आप सब अवश्य सम्मिलित हो तथा अन्य महिला सदस्यों को भी इसकी सूचना का आदान-प्रदान करें। इस बैठक के अंतर्गत सभी महिला सदस्य अपने घर से सीजन अनुसार व्यंजन बनाकर लाएँ उसकी प्रतियोगिता रहेगी तथा श्रीमती रेखा पंडित विभिन्न व्यंजन बनाने का प्रशिक्षण देंगी। साथ ही मनोरंजन गेम्स भी आयोजित होंगे।

-सौ.सोनिया मंडलोई
सचिव मो. 9826344266

धरती पे रूप 'माँ-बाप' का उस विधाता की पहचान है...

ऐसा कहा जाता है कि परमात्मा हर घर में जाकर नहीं रह सकते थे, इसलिए उन्होंने माँ बनाई। माता और पिता साक्षात परब्रह्म के स्वरूप है, लेकिन वर्तमान परिस्थिति में भौतिक उलझनों के चलते सन्तान अपने माता-पिता को पर्याप्त सम्मान नहीं दे पा रही है, जो भविष्य में उनके स्वयं के लिए दुःखद साबित हो रहा है। समय की मांग यह है कि बेटे भले ही रोजगार और कॅरियर के सिलसिले में परिवार से दूर रहते हों, परन्तु वे अपने माता-पिता से भावनात्मक संबंध बनाए रखें तथा जरुरत पड़ने पर दस काम छोड़कर उनके पास पहुँच जाएँ। क्योंकि जब तक हमारे माता-पिता साथ होते हैं तब तक हमें किसी चीज की परवाह नहीं होती, ऐसा कहा जाता है कि माता-पिता के रहते ग्रहों की प्रतिकूलता भी बेअसर रहती है। वास्तव में हमारे पास जीवन में जो उपलब्ध होता है उसकी कद्र हम नहीं कर पाते हैं, जब खो जाता है तब उसका महत्व मालूम पड़ता है।

सेवा का अवसर- खुशनसीब होती है, वह सन्तान जिसे अपने माता-पिता की सेवा का अवसर प्राप्त होता है, वृद्धावस्था में बीमार होने पर अपने माता-पिता का उसी प्रकार ध्यान रखकर सेवा करनी चाहिए, जैसी वे हमारे बचपन में बीमार होने पर करते थे। जिनको सेवा का ऐसा अवसर मिला है वे अपने आपको खुशनसीब समझे एवं पूरा मन लगाकर सेवा करें। ऐसा देखा गया है कि जिन माता-पिता के साए में आप सभी गमो-मुश्किल से बचे रहते हैं यदि उनकी सेवा कर दी तो उनके परमधाम जाने के बाद भी आपको उसी तरह का पहले जैसा बेफिक्री का जीवन उनके आशीर्वाद से प्राप्त हो जाता है। दरअसल बीमार एवं वृद्ध माता-पिता को दवा से ज्यादा आपके प्यार और सहानुभूति की जरूरत होती है। आप पाठकगण यदि अनुभव करेंगे तो पाएंगे कि प्रत्येक माता-पिता अपने जीवनकाल में केवल अपनी सन्तान के सुखद भविष्य का निर्माण ही मनसा-वाचा कर्मणा किया करते हैं। उन्हें अपनी उन्नति से ज्यादा संतान की उन्नति और उज्ज्वल भविष्य की चिंता होती है, लेकिन सन्तान से आखिर वे बदले में क्या चाहते हैं, थोड़ा सा प्यार, थोड़ी सी सहानुभूति वह अवश्य देना चाहिए, भले ही स्वार्थवश मतलब अपने माता-पिता के अवसान के पश्चात् अपना जीवन सुखद बनाए रखने का यदि उद्देश्य हो। इस विचार के द्वारा मैं अपने समाज के बल्कि जो भी इस लेख को पढ़ रहे हों, उनको संदेश देना चाहती हूँ कि हम सब अपने आसपास श्रवणकुमारों को भी देख रहे हैं तथा माता-पिता की उपेक्षा करने वाली सन्तानों को भी और यह भी कि जिन्होंने आशीर्वाद लिया वे फल-फूल रहे हैं।

जो आशीर्वाद नहीं ले पाए, माफ करना माता-पिता अपने कपूतों को भी कभी बद्दुआ नहीं देते। लेकिन उनकी प्रगति तो थम ही जाती है। अतः जीवन को सुखमय बनाने का एकमात्र सूत्र सेवा है, यदि यह सेवा दिल से की जाए तो उनके आशीर्वाद से आपके जीवन में चमत्कार होने लगते हैं, इसको केवल पढ़े नहीं अपने आसपास महसूस करें तथा जरूरत पड़ने पर अपने माता-पिता की दिल से सेवा करें, उनके लिए नहीं अपने लिए। अपने स्वर्णिम सुखमय, सुकूनमय जीवन के लिए।

इस सम्बन्ध में अपने विचार 20 जून 2016 तक अवश्य हमें भिजवा देवें। आगामी अंक में उन्हें प्रकाशित किया जाएगा।

-सम्पादक

बधाई

त्रिशा नागर के द्वितीय जन्मदिन पर श्री आय.एस.नागर एवं श्रीमती ममता नागर (दादा-दादी) श्री राहुल नागर एवं रुचि नागर (पापा-मम्मी) एवं सम्पूर्ण नागर परिवार द्वारा बधाई।

चिरायु मेहता को शत प्रतिशत अंक मिले

चिरायु मेहता (सुपुत्र-सौ.साक्षी हर्ष मेहता) को सी.बी.एस.सी. दसवीं परीक्षा में 10 सीजीपीए अंक प्राप्त किए। शतप्रतिशत अंक प्राप्त करने पर समाज एवं परिवार गौरवान्वित हुआ है। बधाई।

सत्व मेहता, अहमदाबाद

सत्व मेहता सुपुत्र श्री हिमांशु मेहता अहमदाबाद ने सीबीएससी दसवीं की परीक्षा में 8.2 सीजीपीए अंक प्राप्त किए। बधाई।

यदि आप गुस्से के एक क्षण में धैर्य रखते हैं, तो आप दुःख के सौ दिन से बच सकते हैं।

इसे अवश्य पढ़ें

वो और हम...!

अभी विचार मंथन का दौर चल रहा है, सरकार ने आगामी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए सिंहस्थ महाकुंभ के दौरान करोड़ों रुपए खर्च कर अमृत बिंदू तय किए। इस वैचारिक दौर में हमें भी अपने समाज के लिए तय करना चाहिए कि क्या हो... क्या ना हो। अपने समाज के लिए भविष्य की योजना बनाने के लिए अन्य समाजों से तुलनात्मक अध्ययन की जरूरत है। किस समाज में क्या चल रहा है? हमारे समाज के श्री राजेन्द्र दवे ने एक बार पहले भी बोहरा समाज के बारे में जानकारी देते हुए कहा था कि हम इस समाज से प्रेरणा लेकर समाज में सुधार कर सकते हैं।

इतिहास गवाह है कि बोहरा समाज के लोग मूल गुजरात के निवासी होकर नागर ब्राह्मण ही थे तथा मुस्लिम शासकों के हमले और ज्यादती के कारण उन्होंने अपना धर्म परिवर्तन किया और हमारी ही तरह देश के विभिन्न भागों में विस्तारित हुए। हमारी चर्चा का विषय कतई भी यह नहीं है कि वे नागर ब्राह्मण है या नहीं हम तो उनके द्वारा चलाई जा रही रचनात्मक एवं समाजोत्थान की गतिविधियों से अपनी तुलना करना चाहते हैं, क्योंकि वह हमारे लिए लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। आखिर क्या अंतर है हमारे और उनके बीच देखिए-

वो बोहरा समाज में ज्यादातर लोग स्वयं का व्यवसाय करना पसंद करते हैं, भले ही वह बड़ा हो या छोटा, वे नौकरी बहुत कम करते हैं तथा अपनी प्रतिमाह की आय का एक से डेढ़ प्रतिशत तक हिस्सा अपने क्षेत्र की मस्जिद में ईमानदारी से जमा करवा देते हैं। समाज के धर्मगुरु सैयदना सा. के प्रतिनिधि प्रत्येक नगर एवं गाँव में नियुक्त हैं। जो उस प्राप्त राशि को उनके बताए अनुसार समाज कल्याण के कार्यों में खर्च करते हैं।

हम नागर ब्राह्मण समाज के ज्यादातर लोग नौकरी करना पसंद करते हैं। समाज के निर्माण या अन्य आयोजनों के लिए सहयोग राशि वसूलने के लिए घर-घर जाना पड़ता है। समाजजन स्वेच्छा या स्वप्रेरणा से सहयोग राशि देते है। कुछ अपवाद भी है जो आयोजनों में आकर अपनी सहयोग राशि जमा करते हैं या निर्माणों के लिए बैंक खाते में सीधा पैसा जमा करते हैं, परन्तु यह संख्या कम ही है।

वो बोहरा समाज ने अपनी मातृभाषा नहीं छोड़ी, वे सब आज भी घर-बाहर गुजराती भाषा का ही उपयोग करते हैं तथा जरूरत के अनुसार स्थानीय भाषाओं का उपयोग करते हैं। वे आम बोलचाल एवं घरेलू बातचीत में केवल गुजराती भाषा का उपयोग ही करते हैं।

हम हमने अपनी मातृभाषा अर्थात गुजराती भाषा प्रायः छोड़ दी है, कुछ घरों में जरुर गुजराती भाषा का आज भी चलन है, परन्तु ज्यादातर परिवार स्थानीय भाषाओं का ही उपयोग करते हैं, जबकि हम यदि अपनी मातृभाषा का उपयोग करें तो कई लाभ प्राप्त कर सकते हैं। खासकर गुजराती समाज में आजकल सदस्यता का मापदंड भाषा को ही बना दिया है, वे केवल भाषा के आधार पर ही मानते हैं कि हम गुजराती है। गुजराती समाज के यदि हम नागरजन सदस्य बनते हैं तो हमें अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। लेकिन हम तो अपनी मातृभाषा को ही छोड़ चुके हैं।

वो व्यवसाय एवं आवास एक ही स्थान पर रखते हैं तथा संगठन में ही रहना पसंद करते हैं, जैसे इन्दौर के बोहरा बाजार, सैफी नगर एवं रानीपुरा आदि क्षेत्र में अधिकतर परिवार निवासरत हैं। इनके व्यवसाय स्थल भी निवास के निकट रहते हैं, संयुक्त रूप से निवास करने के अनेक लाभ हैं, जिनसे ये परिचित है, किसी भी कार्यक्रम या अवसर पर थोड़ी देर में ही सब एकत्र हो जाते हैं, एक-दूसरे का सहयोग कर देते हैं। ज्यादातर शहरों एवं स्थानों में ये एक ही बस्ती में साथ-साथ निवास करते हैं।

हम दूर-दूर रहना पसंद करते हैं। एक समय में जब गुजरात से शुरुवात में आए थे, तब एक साथ ही निवास करते थे। कई नगरों एवं गाँवों में ही नागरवास, नागर मोहल्ला, नागरवाड़ी आदि थे तथा ज्यादातर परिवार वहीं निवास करते थे। शनैःशनैः सभी नागर परिवार इन बस्तियों से निकलकर शहर के अन्य भागों में फैल गए। ये नागर बस्तियाँ अब लगभग खाली हो चुकी है। केवल बांसवाड़ा का नागरवाड़ा इसका अपवाद है, जहाँ सभी नागरजन एक साथ निवास करते हैं तथा साथ-साथ रहने का लाभ भी उठाते हैं। कुछ स्थानों पर उज्जैन, ब्यावरा आदि में हाटकेश्वर विहार बसाकर नागर परिवारों को एक साथ बसाने की योजनाएँ चल रही है, परन्तु इस कार्य में अभी समय लगेगा।

समाजोत्थान के मामले में आज बोहरा समाज बहुत आगे है तथा अनेक विशेषताएं हैं, उनकी उपलब्धियाँ यदि देखें तो हम उनसे बहुत पीछे हैं। बोहरा समाज एवं हमारा तुलनात्मक अध्ययन यदि करना है तो हाटकेश वाणी का एक पूरा अंक भी कम पड़ जाएगा, लेकिन विचार विमर्श का यह दौर शुरु हो गया है जो आगामी अंकों में भी जारी रहेगा। हम अगर उनकी कार्यशैली एवं गतिविधियों से प्रेरित हो कुछ सुधार हमारे समाज में कर सकें तो इस लेख का उद्देश्य सार्थक हो सकता है।

उपरोक्त विचार मंथन में यदि पाठकों की सहमति-असहमति है तो वे अवश्य अवगत करावें। वे यदि इस मंथन में शामिल होंगे तो हमें खुशी होगी, क्योंकि किसी भी बहाने आज हमको अपने समाज के लिए अमृत की जरूरत है और विचार मंथन के अलावा उसका कोई विकल्प नहीं है।

-दीपक शर्मा मो. 9425063129

परमात्मा से दूरी तो खुशियाँ अधूरी

अनादिकाल से मानव इस सृष्टी का सबसे महत्वपूर्ण प्राणी माना गया है। मानव अपनी बुद्धि, विवेक, कल्पनाशीलता तथा सृजनधर्मी होने के कारण हर युग (काल) का आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग रहा है। पूर्वकाल (त्रेतायुग, द्वापरयुग) में मानव ने अपनी धर्मनिष्ठा, योग्यता, सतबुद्धि के बल पर अनेक यशस्वी कार्य कर अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। त्रेतायुग में श्रीराम ने आज्ञाकारिता, मर्यादा, कुप्रवृत्तियों का संहार कर, द्वापरयुग में श्रीकृष्ण ने धर्मनिष्ठा, अन्याय के प्रति लड़ने तथा ज्ञानमार्ग के अनुसरण का, तदुपरांत महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, गुरुनानक इत्यादि ने जो आदर्श स्थापित किए हैं वे आने वाली पीढ़ी का अनन्त काल तक मार्गदर्शन कर प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे। हमारे पूर्ववर्ती ऋषि-मुनियों तथा वर्तमान काल के अनेक महापुरुषों जैसे- रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, दयानन्द सरस्वती इत्यादि ने अध्यात्म, साहित्य, निष्काम सेवा तथा नैतिकता के जो प्रेरणासूत्र दिये हैं उन्हें जीवन में उतार कर आज वह मानव से महामानव बन सकता है।

आज मनुष्य जीवन की आपा-धापी तथा भौतिकवादी सांसारिक भोगवादी जगत में इतना खो गया है कि उसने अपनी बाह्य उन्नति को ही सब कुछ मान लिया है। आत्मिक उन्नति/आत्मज्ञान को दोयम दर्जे की वस्तु मानने के कारण अनेक सुख के साधन होने के बावजूद भी वह वास्तविक सुख से वंचित हो, असहज महसूस करता है। किसी व्यक्ति का सौन्दर्य उसके मन की सुन्दरता पर आधारित है न कि बाह्य सौन्दर्य पर, क्योंकि बीमारी या वृद्धावस्था में शरीर की सुन्दरता नष्ट हो जाती है वहीं मन का सौन्दर्य तो दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है। मन की सुन्दरता को प्राप्त करने के लिये अनेक साधन बताए गये हैं, जिसमें अध्ययन एवं श्रवण प्रमुख है। धार्मिक, आध्यात्मिक अथवा नैतिक कथाओं के अध्ययन या श्रवण से मनुष्य का नैतिक उत्थान होता है। ये मानव जीवन की समस्याओं का समाधान कर उसे सही मार्ग दिखाती है। आत्मा के जागरण से जब व्यक्ति अपने स्वरूप को समझता है तो मूर्ख काली से महाकवि कालीदास, रामबोला से तुलसीदास, रत्नाकर डाकू से ऋषि वाल्मीकि बनते देर नहीं लगती। इसलिये कहा गया है-

मानुष जनम अमोल है, मिले न बारम्बार। पक्का फल जो गिर पड़ा, लगे ना दूजी बार।।

प्रायः यह देखा गया है कि अभाव, संघर्ष, निर्धनता की स्थिति में तो मनुष्य ईश्वर की उपासना पूर्ण तन्मयता से करता है, परन्तु समृद्धि या ऐश्वर्य प्राप्त होने पर अहंकारवश वह शान-शौकत तथा विलासिता में इतना अधिक लिप्त हो जाता है कि वह परमात्मा से दूरी कर लेता है तथा महज दिखावे के लिये दान-धर्म करता है। परमात्मा से यही दूरी कभी-कभी उसके कष्टों का कारण बनती है। इस संदर्भ में निम्न दो प्रसंगों का उल्लेख करना समीचीन होगा। पहला उल्लेख आध्यात्मिक कथानक पर आधारित है, परन्तु दूसरा उल्लेख मेरे स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है।

यह घटना भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के दौरान की है। अपने वनवास के अंतिम पड़ाव पर जब रावण से युद्ध के लिये लंका जाने हेतु समुद्र पर सेतु का निर्माण करना था तब जामवन्त प्रत्येक पत्थर पर श्रीरामलिखकर उसे उलटा कर वानरों को दे रहे थे, जिसे समुद्र में डालने पर वह तैरने लगता था। यह कार्य भक्त हनुमान सहित सम्पूर्ण वानर सेना अत्यन्त ही निष्ठा, समर्पण एवं पूर्ण उत्साह से कर रहे थे। श्रीराम तथा लक्ष्मण समीप ही एक शिला पर बैठे यह कार्य देख रहे थे। श्रीराम ने सोचा कि सेतु मेरे लिये बनाया जा रहा है और मैं आराम से बैठा रहूँ? यह उचित नहीं है। इस कार्य में मुझे भी सहयोग करना चाहिये, ऐसा मन में विचार कर श्रीराम ने उठकर एक पत्थर (शिला) अपने हाथों से समुद्र में डाली। ज्यों ही श्रीराम ने शिला समुद्र में डाली, वह डूब गयी। यह दृश्य देखकर हनुमान, लक्ष्मण तथा समीप खड़े सभी वानर आश्चर्य चकित हो गये तथा हनुमान ने श्रीराम की ओर विस्मित भाव से जिज्ञासावश देखा। यह दृश्य देख पास खड़े विभीषण ने तुरन्त ही उत्तर दिया कि यह श्रीराम का प्रताप है जो कि शिलाओं को तैरा रहा है जो वस्तु राम से छूटी अर्थात् दूर हुई उसे तो डूबना ही है। यह श्रीराम का सम्पर्क ही तो हमें जीवन्त बनाए हुए हैं जो राम से दूर हुआ अर्थात् विमुख हुआ। उसका जीवन सार्थक नहीं हो सकता। यह सुन राम-लक्ष्मण के मुखमण्डल पर मुस्कान आ गयी।

कुछ समय पूर्व मैं, सपत्नीक आध्यात्मिक अभिरूचि के कारण कुछ धार्मिक स्थलों के भ्रमण हेतु गया था। इस दौरान हमने भगवान श्रीकृष्ण के जन्म तथा बाललीलाओं से सम्बंधित स्थानों मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, नन्दगाँव, बरसाना के विभिन्न मंदिरों तथा अनेक अन्य स्थलों का भ्रमण कर दर्शन लाभ प्राप्त किया था। इन सभी स्थानों पर स्थित मंदिरों तथा परिसरों की भव्यता (विशेषकर मथुरा तथा वृन्दावन की) अद्वितीय, अनुपम एवं अविस्मरणीय प्रतीत हुई। जब हम यमुना नदी के किनारे बसे गोकुल गये तथा वहां स्थित मंदिर एवं ब्राह्मण घाट (जहाँ माता यशोदा को बालक कृष्ण के मुख से मिट्टी निकालने पर मुख में ब्रह्माण्ड के दर्शन हुए थे) का दर्शन/अवलोकन किया तब वहाँ के जीर्ण-शीर्ण मंदिरों की दुर्दशा तथा वहाँ निवासित व्यक्तियों की आज इतने वर्षों पश्चात् आर्थिक विपन्नता देख मन में एक निराशाभाव जाग्रत हुआ। जब हम नन्दगाँव पहुँचे तब ज्ञात हुआ कि जब कंस को कृष्ण जन्म पश्चात् इस बात का पता चला कि उसके मृत्यु का कारक गोकुल में बाल रूप में विद्यमान है तथा उसने शिशुओं पर आतंक करना प्रारंभ कर दिया तथा तब नन्दबाबा तथा माता यशोदा एक रात्री को चुपचाप दो वर्ष तीन दिन आयु के श्रीकृष्ण को लेकर पहाड़ी पर स्थित नंदीश्वर मंदिर (जो अब नन्दगाँव के नाम से जाना जाता है) आ गये थे। कहावत है कि इस स्थान पर शिवजी ने साधु का रूप धारण कर बाल रूप कृष्ण के दर्शन कर उनका जूठा खाना खाया था। इसलिये आज भी यहाँ पहले भोग कृष्ण मंदिर में अर्पित कर तदुपरांत भोग शिव मंदिर ले जाया जाता है। नंदगाँव से कुछ दूरी पर बरसाना (राधा की जन्मस्थली) है जो कि राधा-कृष्ण के बाललीला/रासलीला के लिये विख्यात है। गोकुल की अवनति को देख यह आभास हुआ कि जिसको कृष्ण ने छोड़ा उसकी उन्नति कैसे हो सकती है! क्योंकि जीवन में आनन्द, प्रफूल्लता समृद्धि के पर्याय रूप का ही तो दूसरा नाम कृष्ण है।

उपवर्णित कथानकों का भावार्थ यही है कि बिना ईश्वर की कृपा के जीवन में आनन्द, खुशियाँ अधूरी है। इसी बात को संत कबीर ने अपने शब्दों में कहा है-

पांच पहर धन्धे गया, तीन पहर गया सोय। एक पहर हरि नाम बिन, मुक्ति कैसे होय।

ज्यों तिल माही तेल है, ज्यों चकमक में आग। तेरा साँई तुझमें, बस जाग सके तो जाग।।

संदेश- प्रायः यह देखा गया है कि व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था में ईश्वर की भक्ति (उपासना) करता है जबकि उसे अपनी युवावस्था तथा प्रोढ़ावस्था में भी प्रतिदिन कुछ समय ईश भक्ति करना चाहिये।

आज मनुष्य अज्ञान, अभाव तथा अन्याय के जाल में फंसा हुआ प्रतीत होता है जिससे मुक्त होने के लिये उसे अज्ञान के ज्ञान से, अभाव को कर्म से तथा अन्याय को उदारता (भक्ति) से जीतना होगा।

-प्रो.राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी-40, चन्द्रनगर (एम.आर.9), इन्दौर

सूर्यनमस्कार से पूरे परिवार को लाभ-2

सूर्य नमस्कार के 12 मंत्र

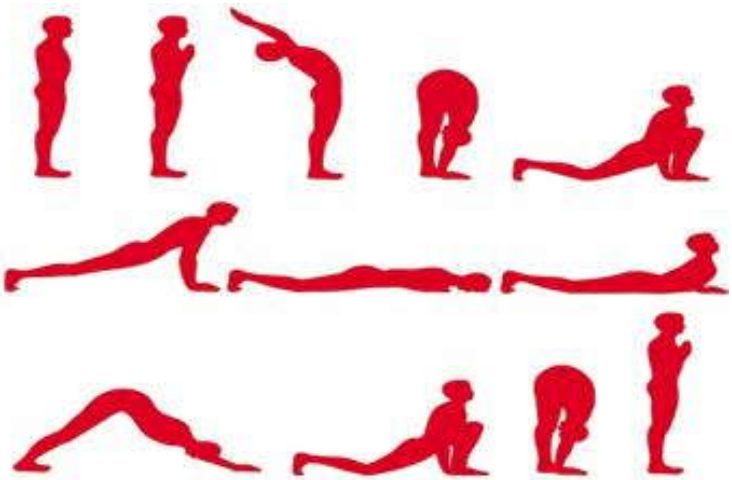

आदित्यस्य नमस्कारन् ये कुर्वन्ति दिने दिने।
आयुः प्रज्ञा बलम् वीर्यम् तेजस्तेशान् च जायते।।

(जो लोग प्रतिदिन सूर्य नमस्कार करते हैं, उनकी आयु, प्रज्ञा, बल, वीर्य और तेज बढ़ता है)

सूर्य नमस्कार के बारह मंत्र

सूर्य नमस्कार के बारह मंत्र उचारे जाते हैं। प्रत्येक मंत्र में सूर्य का भिन्न नाम लिया जाता है। हर मंत्र का एक ही सरल अर्थ है- सूर्य को (मेरा) नमस्कार है। सूर्य नमस्कार के बारह स्थितियों या चरणों में इन बारह मंत्रों का उच्चारण किया जाता है।

आसन

सूर्य नमस्कार योगासनों में सर्वश्रेष्ठ प्रक्रिया है। यह अकेला अभ्यास ही साधक को सम्पूर्ण योग व्यायाम का लाभ पहुँचाने में समर्थ है। इसके अभ्यास से साधक का शरीर निरोग और स्वस्थ होकर तेजस्वी हो जाता है। सूर्य नमस्कार स्त्री, पुरुष, बाल, युवा तथा वृद्धों के लिए भी उपयोगी बताया गया है। सूर्य नमस्कार का अभ्यास बारह स्थितियों में किया जाता है, जो निम्नलिखित है-

(1) दोनों हाथों को जोड़कर सीधे खड़े हों। नेत्र बंद करें। ध्यान आज्ञा चक्र पर केन्द्रित करके सूर्य भगवान का आह्वान ॐ निमत्राय नमः मंत्र के द्वारा करें।

(2) श्वास भरते हुए दोनों हाथों को कानों से सटाते हुए ऊपर की ओर तानें तथा भुजाओं और गर्दन को पीछे की ओर झुकाएँ। ध्यान को गर्दन के पीछे विशुद्धिचक्र पर केन्द्रित करें।

(3) तीसरी स्थिति में श्वास को धीरे-धीरे बाहर निकालते हुए आगे की ओर झुकाएं। हाथ गर्दन के साथ, कानों से सटे हुए नीचे जाकर पैरों के दाएं-बाएं पृथ्वी का स्पर्श करें। घुटने सीधे रहें। माथा घुटनों का स्पर्श करता हुआ ध्यान नाभि के पीछे मणिपूरक चक्र पर केन्द्रित करते हुए कुछ क्षण इसी स्थिति में रुकें। कमर एवं रीढ़ के दोष वाले साधक न करें।

(4) इसी स्थिति में श्वास को भरते हुए बाएं पैर को पीछे की ओर ले जाएं। छाती को खींचकर आगे की ओर तानें। गर्दन को अधिक पीछे की ओर झुकाएं। टांग तनी हुई सीधी पीछे की ओर खिंचाव और पैर का पंजा खड़ा हुआ। इस स्थिति में कुछ समय रुकें। ध्यान को स्वाधिष्ठान अथवा विशुद्धि चक्र पर ले जाएं। मुखाकृति सामान्य रखें।

(5) श्वास को धीरे-धीरे बाहर निष्कासित करते हुए दाएं पैर को भी पीछे ले जाएं। दोनों पैरों की एड़ियाँ परस्पर मिली हुई हो। पीछे की ओर शरीर को खिंचाव दें और एड़ियों को पृथ्वी पर मिलाने का प्रयास करें। नितम्बों को अधिक से अधिक ऊपर उठाएं। गर्दन को नीचे झुकाकर ठोड़ी को कण्ठकूप में लगाएं। ध्यान सहस्रार चक्र पर केन्द्रित करने का अभ्यास करें।

(6) श्वास भरते हुए शरीर को पृथ्वी के समानांतर, सीधा साष्टांग दण्डवत करें और पहले घुटने, छाती और माता पृथ्वी पर लगा दें। नितम्बों को थोड़ा ऊपर उठा दें। श्वास छोड़ दें। ध्यान को अनाहत चक्र पर टिका दें। श्वास की गति सामान्य करें।

(7) इस स्थिति में धीरे-धीरे श्वास को भरते हुए छाती को आगे की ओर खींचते हुए हाथों को सीधे कर दें। गर्दन के पीछे की ओर ले जाएं। घुटने पृथ्वी का स्पर्श करते हुए तथा पैरों के पंजे पर खड़े रहें। मूलाधार को खींचकर वहीं ध्यान को टिका दें।

(8) श्वास को धीरे-धीरे बाहर निष्कासित करते हुए पैर को भी पीछे ले जाएं। दोनों पैरों की एड़ियां परस्पर मिली हुई हों। पीछे की ओर शरीर को खिंचाव दें और एड़ियों को पृथ्वी पर मिलाने का प्रयास करें। नितम्बों को अधिक से अधिक ऊपर उठाएं। गर्दन को नीचे झुकाकर ठोड़ी को कण्ठकूप में लगाएं। ध्यान सहस्रार चक्र पर केन्द्रित करने का अभ्यास करें।

(9) इसी स्थिति में श्वास को भरते हुए बाएं पैर को पीछे की ओर ले जाएँ। छाती को खींचकर आगे की ओर तानें। गर्दन को अधिक पीछे की ओर झुकाएँ। टांग तनी हुई सीधी पीछे की ओर खिंचाव और पैर का पंजा खड़ा हुआ। इस स्थिति में कुछ समय रुकें। ध्यान को स्वाधिष्ठान अथवा विशुद्धि चक्र पर ले जाएँ। मुखोंति सामान्य रखें।

(10) तीसरी स्थिति में श्वास को धीरे-धीरे बाहर निकालते हुए आगे की ओर झुकाएं। हाथ गर्दन के साथ, कानों से सटे हुए नीचे जाकर पैरों के दाएं-बाएं पृथ्वी का स्पर्श करें। घुटने सीधे रहें। माथा घुटनों का स्पर्श करता हुआ ध्यान नाभि के पीछे मणिपूरक चक्र पर केन्द्रित करते हुए कुछ क्षण इसी स्थिति में रुकें। कमर एवं रीढ़ के दोष वाले साधक न करें।

(11) श्वास भरते हुए दोनों हाथों को कानों से सटाते हुए ऊपर की ओर तानें तथा भुजाओं और गर्दन को पीछे की ओर झुकाएं। ध्यान को गर्दन पीछे विशुद्धिचक्र पर केन्द्रित करें।

(12) यह स्थिति- पहली स्थिति की भाँति रहेगी। (क्रमशः)

-दयाराम नागर,
योग प्रशिक्षक, सुमेरपुर

समझ का फेर

लघुकथा

उज्जैन में सिंहस्थ मेला अपनी भव्यता और प्राकृतिक आपदाओं के बीच जारी था। पुण्य प्राप्ति की लालसा में लोग बरबस खिंचे चले आ रहे थे। साधुओं के राजसी ठाट बाट देख कर वे दंग थे। रवि इन सबके बीच सच्चे साधु की खोज में लगा हुआ था। पांच छह दिन की लगातार मेहनत रंग लाई। उसे एक पेड़ के नीचे कबीर बैठे दिखायी दिये। उसे आशा बंधी। एक विश्वास मन में जनमा कि अब उसे भगवान के दर्शन जरुर होंगे। वह उनके पास पहुंचा, प्रणाम किया और शिष्य भाव से पूछा-'' गुरुदेव मुझे बताओ कि भगवान कहां हैं?''

''भगवान हर जगह, हर प्राणी में, और संसार की हर वस्तु में हैं।'' कबीर ने समाधान किया। रवि घर जाने के रास्ते पर निकला ही था कि सामने से एक मदमस्त हाथी को चिंघाड़ते हुए भयानक अंदाज में अपनी ओर आक्रामक मुद्रा में आते देखा।

''बचो बचो हाथी पागल हो गया है।'' महावत के चिल्लाने की आवाज उसे सुनाई दी। लेकिन रवि ने सोचा-''ईश्वर तो सब में है। वह हाथी में भी है और मुझ में भी है। क्या भगवान ही भगवान पर आक्रमण करेगा ? नहीं ऐसा नहीं हो सकता। यह हाथी मुझ पर आक्रमण नहीं करेगा।'' अपने इस ज्ञान के दम पर वह वहीं अपनी जगह पर डटा रहा और भागने की जरा भी कोशिश नहीं की। हाथी उसके सिर पर आ चुका था उसने रवि को सूंड में लपेटा और दूर फैंक दिया। किस्मत से वह एक महंत के टेंट पर जा कर गिरा और चोट खाने से बच गया पर उसका विश्वास बुरी तरह हिल गया और वह भ्रमित हो गया। लोगों ने उसे टेंट से नीचे उतारा। वह शिकायत और गुस्से से भरा वापस कबीर के पास पहुंचा, बोला-''देखा,हाथी ने मेरे साथ क्या सलूक किया ? अगर हाथी में भी भगवान हैं तो उसने मुझे उठा कर क्यों फैंका ? कबीर ने कहा-''इसमें कोई संशय नहीं कि हाथी में भी भगवान हैं, लेकिन तुम यह भूल गये कि महावत में भी भगवान व्याप्त हैं और उसने तुम्हें रास्ते से हटने के लिए चिल्ला चिल्ला कर चेतावनी दी थी। अब जाकर रवि को यह समझ में आया कि ईश्वर को जानना इतना गूढ़ और रहस्यमय क्यों है और दार्शनिक चरैवेति चरैवेति क्यों कहते रहते हैं।

-आशा नागर
सी 12/9 , ऋषिनगर, उज्जैन

कु.प्रियल नागर को बधाई

कक्षा 10वीं सीबीएसई में कार्मल कान्वेंट की छात्रा प्रियल नागर सुपुत्री (आलोक सीमा नागर) ने ए ग्रेड 9.8 सीजीपीए प्राप्त किये हैं। उन्हें चार विषयों में ए वन ग्रेड प्राप्त हुयी हैं। उनकी इस सफलता पर नागर परिवार व मेहता परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाईयाँ।

दोस्ती

औस की बूंदों सी होती है ये दोस्ती...
सुंदर, सहज और सजल।
उषा की बेला से ही मुस्कुराती,
इठलाती और दंभाती।
सूरज के स्वर्णिम आलोक सी खिलती,
दमकती और निखरती।
रज–कण में छुपे केंचुऐ सी समर्पित,
संरक्षित और उर्वरित।
तपती धूप सी उज्ज्वलित,
कर्मरित और प्रेरित।
एक स्तंभ की भाँति खड़े वृक्ष सी सहनशील,
कर्मशील और अर्पणशील।
नील–गगन में उड़ते पंछी सी चंचल,
कौतुहल और गूंजल।
संध्या के धुमिल रंगों सी मस्ताती,
मदमाती और मधुर गीत सुनाती;
तोकाली रात्री सी सहमती,
ढांढस बँधाती और दृढ़–निश्चय करती।
दोस्ती तेरे कई रंग, सब हर्षाते,
मन बहलातेऔर अटूट बंधन में बांधते।

–नीरा नागर ठाणे
मुम्बई (महाराष्ट्र)
मो. 09987768293

अ.सौ.श्रीमती आशाजी भट्ट
अवसान दिनांक 24.5.2016

यथा नाम... तथा गुण

14 अक्टूम्बर 1955 में कर्त्तव्य परायण उच्च आदर्शों के धनी शिक्षा जगत में नई-नई विधाओं के प्रणेता श्रद्धेय स्व.श्री विश्वनाथजी मेहता पीपलरावां वालों के यहाँ जन्मी श्रीमती आशा भट्ट अत्यन्त ही मृदुभाषी शान्तचित्त, तुरन्त ही आगन्तुकों का मन बरबस आकर्षित कर लेने वाली विदुषी नारी थी।

वरिष्ठ पत्रकार श्री ओमप्रकाश मेहता (भोपाल) की सबसे छोटी लाड़ली बहन, किसी गंभीर और पेचिदा समस्या का समाधान त्वरित करती थी। बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् 1975 में श्री गणेश मंदिर खजराना के मुख्य पुजारी मोहन भट्ट के साथ विवाह बन्धन में बंधी। एक पुत्र पुनीत भट्ट दो पुत्रियाँ, पुर्णिमा व्यास रतलाम तथा प्रतिमा नागर उज्जैन (बैंगलोर) को शिक्षित और सुसंस्कारित करने का दायित्व भी बखूबी पूर्ण किया। स्व.श्री मनोहरजी भट्ट के 3 पुत्रों विनित, सुमित और उदित भट्ट को भी पुत्रवत स्नेह देकर चार पुत्रों की माता बन गई। चारों पुत्रों को उन्होंने क्रमशः राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न नाम देकर भरपूर स्नेह देकर पूर्ण संस्कारित किया। सदैव सभी कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग करने प्रेरणा अपने पति व बच्चों को देकर स्वयं भी सदैव तत्पर रहती। ऐसी विदुषी नारी का असमय निधन अपूरणीय क्षति है। भगवान श्री गणेशजी उनकी आत्मा को चिरशान्ति प्रदान कर अपने श्री चरणों में स्थान दें यही कामना है।

गाँधी के रामराज्य की कल्पना

गाँधी के रामराज्य की कल्पना साकार हो।
देश की छवि सुंन्दर बनें, सपना भी साकार हो।
बहुत उठाये दर्द हम यहाँ चलते रहे हैं
आँधी और तूफाँ के थपेड़ों में हम पलते रहे हैं।
अब दर्द का निवारण हो अच्छा व्यवहार हो।
गाँधी के रामराज्य की...
झोपड़ी से महल तक स्नेह के दीप जले।
भूख-गरीबी, बेरोजगारी अब न यहाँ पले।
हो घर-आँगन में खुशहाली, सुख समृद्धि प्यार हो...
गाँधी के राम राज्य की..
जो बगावत के स्वर में बात करता है।
हाथ मिलाकर जो हमसे घात करता है।
ऐसी चालों को चले क्यूँ चमन में बहार हो।
गाँधी के रामराज्य की..
अब तो मुहब्बत हो भारती चारो दिशाओं में।
खुशबू प्यार की महके, अब इन फिजाओं में।
गुलशन महकता रहे, गुले-गुलजार हो।
गाँधी के रामराज्य में...

-सुभाष नागर 'भारती'
नागर मेडीकल स्टोर
अकलेरा फोन 07431-272310

भावपूर्ण श्रद्धांजली

दशमपुण्य स्मरण

स्व.श्री रामवल्लभजी नागर एड्व्होकेट
प्रभू मिलन : 16.06.2006

प्रथम पुण्य स्मरण

स्व.श्री संजय नागर (लड्डू) भू-जल विद्
प्रभू मिलन – 17.6.2015

श्रद्धावनत– मनोरमा नागर, सीमा नागर, सुशील–रत्ना नागर, सुधीर–ज्योति नागर, अनिल–अनिता नागर, अपूर्व–रीतू नागर, अंकुर –पूनम नागर, अंकित–स्वाति नागर, मेघा नागर, वंशिका नागर, पर्व नागर, सक्षम नागर, टिया नागर एवं समस्त नागर परिवार, इन्दौर, अहमदाबाद, सोनकच्छ, देवास

वे हमारी 'भाभी' ही नहीं, माँ भी थीं

27 मई 2016 को इन्दौर में चाँचौड़ा-परिवार की 'आदरणीय वरिष्ठ प्रभावती बसन्तीलाल नागर के स्वर्गवास पर नागर-समाज ही नहीं, अन्य स्नेहीजनों ने भी उन्हें श्रद्धा के साथ विदाई दी।

भाभी को माँ इसलिये सम्बोधित कर रहा हूँ कि उन्होंने हर परिस्थिति में परिवार को जिस तरह सम्हाला, वह सिर्फ़ एक माँ ही कर सकती थी।

चाँचौड़ा में सन् 1939 में परिवार को भारी संकटों का सामना करना पड़ा था। आज़ादी के पूर्व का यह वह समय था जब अन्धविश्वासों से परिवारों को नाना प्रकार के संकटों से जूझना पड़ता था। उसी वर्ष हमारे बड़े भाई स्व. दुर्गाशंकर जी की सुशिक्षित पत्नी सुन्दरबाई का शाजापुर-मायके में प्रसूति के समय ठीक इलाज आदि न मिलने पर स्वर्गवास हो गया था। वे फूल सी छोटी बच्ची छोड़ गई थीं किन्तु माँ के दूध आदि के अभाव में कुछ ही दिनों पश्चात वह भी चल बसीं । इसी वर्ष हमारी माँ को राजगढ़ में पेट में कैंसर के ऑपरेशन के दौरान बचाया नहीं जा सका। माँ की मृत्यु के दर्द से अभी परिवार उबरा भी नहीं था कि राजगढ़ में हमारी बड़ी बहन मणीबाई जो वहाँ शिक्षिका थीं, का साधारण खाँसी, जुकाम, बुख़ार में ही निधन हो गया। वे छोड़ गई थीं दो बच्चे 'वल्लभ' और 'सुमन' जिन्हें हमारे पिताजी लालन-पालन, शिक्षा, विवाह आदि के लिए चाँचौड़ा ही ले आए थे। इस घोर संकटकाल में पिताजी श्री चतुर्भुज जी नागर ने जो कि चाँचौड़ा के ज़मींदार भी थे, ने हिम्मत और धैर्य से परिस्थिति को सम्हाला। इसी वर्ष हमारा छोटा भाई गंगू भी एक वर्ष की आयु में ही माँ के अभाव में चल बसा।

अब हम छोटा भाई विष्णुदत्त (इन्दौर), छोटी बहन चन्द्रकला (शाजापुर), और वल्लभदास (भोपाल) व सुमन (नरसिंहगढ़) की ज़िम्मेदारी परिवार में एकमात्र महिला 'प्रभावती भाभी' पर आ गई जो स्वयं उस समय मात्र 15 वर्ष की थीं। उन्होंने घर में सब बालक-बालिकाओं के रहन-सहन, समय पर खाने पीने की भारी ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाते हुए हम सभी बालक-बालिकाओं को माँ का अभाव खटकने नहीं दिया। बड़े दादा की शादी के पश्चात उनका भार कुछ हल्का हुआ। समय समय पर उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों सहित - ब्याह-शादियों, यज्ञोपवीत आदि में घर की महिला-मुखिया की भाँति अपना कर्तव्य निभाया। सभी से स्नेह के कारण ही अपने अंतिम समय में बीमारी की अवस्था में भी जब कोई परिवार का सदस्य मिलने आता तो उनके बच्चों का नाम लेकर कुशल-क्षेम पूछे बिना नहीं रहतीं।

अंतिम श्वास तक भी उम्र के नाना प्रकार के शारीरिक कष्टों का हँसते-मुस्कुराते हुए भरे-पूरे परिवार एवं स्नेहीजनों से विदा ली.....

ऐसी भाभी माँ को शत शत नमन.

-प्रेमनारायण नागर
स्वतंत्रता सेनानी एवं पत्रकार,
शिवपुरी

पंचम दया जयंती
26 जून 2016

नागर समाज के सर्वप्रिय, विशिष्ट वैज्ञानिक, विभूति, शिक्षा जगत शिरोमणी

स्व.डॉ.दयाशंकर ओ.जोशी

-डॉ.द्वय, डॉ.प्रदीप, रेणुका मेहता, जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार (इन्दौर-महू)

-प्रेषक-
पी.आर.जोशी, इन्दौर

श्री कृष्णाराम नागर, इलाहाबाद

इलाहाबाद निवासी श्री कृष्णाराम नागर (बेटू भाई) सुपुत्र स्व.श्री बुलक्सी गौरजी का देहावसान काशीपुर (उत्तराखंड) में 3 अप्रैल को हो गया। आप अपने पिताजी की तरह बाबा श्री हाटकेश्वरनाथजी के अनन्य भक्त थे तथा कर्मकांडी थे। आप केन्द्र सरकार के कार्यालय (सी.डी.ए. पैंशन इलाहाबाद) से सेवानिवृत्त थे।

-प्रेषक नित्यानंद नागर,
इलाहाबाद मो. 09451374122

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए !
इस तरह न खर्च करो कि कर्ज़ हो जाए !
इस तरह न खाओ कि मर्ज़ हो जाए !
इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए !
इस तरह न चलो कि देर हो जाए !
इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाए !

किसी कार्य को कभी भी कल पर नहीं छोड़ना चाहिए अगले पल क्या हो जाए कौन जानता है

108 वर्षीय बिरजूबाई के निधन पर नागर समाज द्वारा श्रद्धांजली

नागर समाज की वरिष्ठ समाजसेवी श्रीमती बिरजूबाई (उम्र 108 वर्ष) का निधन हुआ। आप पं. रामचन्द्र शर्मा एवं स्व. डॉ. रामरतन शर्मा की माताजी थी। माँ बिरजुबाई धन्य हैं जिन्होंने डॉ. शर्मा जैसे पुत्रों को जन्म दिया। अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व, माँ गायत्री के परम् उपासक, जिनका जीवन समाज को समर्पित, अनेक शिष्यों के पथ प्रदर्शक सरल और नियमित जीवन गुणों से परिपूर्ण, समाज के सुख-दुख में, सामाजिक कार्यों में सदैव सक्रिय रहते थे। गायत्री शक्तिपीठ हाटकेश्वर धर्मशाला के लिये पूर्ण समर्पित थे। उज्जैन हरिसिद्धीपाल धर्मशाला के नवनिर्माण का लक्ष्य डॉ. शर्मा ने ही दिया। उन्हीं के आत्मविश्वास व उत्साह के कारण ही सिंहस्थ 2016में धर्मशाला पूर्ण साकार रूप ले सकी। डॉ. शर्मा ने विद्यार्थियों के हित में दर्जनों पुस्तके लिखी, वे अर्थशास्त्र के साथ ही राजनीति व समाज शास्त्र में भी निपुण थे। आपके द्वारा लिखी गई पुस्तकें कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। सरल, सहज, निष्कपट, स्वभाव के धनी, भावुक व्यक्ति शिक्षाविद्, समाजसेवी, विचारक व चिंतक नागर समाज में व्याप्त विकृतियां, कुरितीयां को दूर करने की दिशा में उनके द्वारा किये गये कार्यों के लिये स्व. माँ बिरजुबाई द्वारा दिये गये संस्कार, मार्गदर्शन प्रेरणादायी रहा। माँ बिरजुबाई के निधन पर मंदसौर हाटकेश्वर न्यास, नागर परिषद्, युवा परिषद् अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता है तथा शर्मा परिवार को इस दु:ख की घड़ी में संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

एक निष्काम कर्मयोगी का महाप्रयाण

कर्मयोगी श्री रमेश नागर (सुपुत्र- श्री राधेलाल नागर श्रीमती सुन्दरदेवी) खाचरोदा का जन्म 15 अगस्त 1935 को महाकाल की नगरी अवंतिका में हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में आपने बी.एस.सी. एवं एम.एस.सी. (मेथ्स) में प्रथम श्रेणी के साथ ही गोल्ड मेडलिस्ट की विशेष योग्यता हासिल की। बाल्यकाल एवं विद्यार्थी जीवन से ही उसकी विचारधारा से प्रभावित को यही आगे चलकर इनका कर्म क्षेत्र बना। आपने राष्ट्र सेवा के इस यज्ञ में आहुती के लिए साधारण स्वयंसेवक से पूर्णकालिक प्रचारक बनकर उज्जैन, इंदौर, जबलपुर, सागर, रामपुर, गुजरात एवं जिन भी क्षेत्रों में संघ प्रमुख ने जो भी कार्य एवं प्रकल्पों का दायित्व दिया उसे निभाया। आपातकाल में जेल में भी रहे। ऐसे महान कर्मयोगी की सतत साधना को अंतिम विराम 23 अप्रैल 2016 को ईश्वर द्वारा श्रीचरणों में लेने के पश्चात् ही मिला। उन्होंने राष्ट्र निर्माण हेतु चुने गए इस पथ की हमेशा तारीफ की। उनकी अंतिम यात्रा में संघ से जुड़ी हस्तियों, गणमान्य नागरिकों एवं समाजजनों ने हिस्सा लेकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

-सतीश नागर, मंदसौर

एक व्यक्तित्व, वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, विद्यार्थियों व समाज के सर्वप्रिय टेनिस-बेडमिंटन खिलाड़ी

स्व.डॉ.श्री सूर्यप्रकाशजी नागर

प्राध्यापक होल्कर कॉलेज, इन्दौर

नवम् पुण्य स्मरण 22 जून 2016

पुष्पांजलि समर्पित- श्रीमती जया नागर, कुमार अपूर्व-सौ.श्रुति नागर एवं जोशी, जाधव, तिवारी परिवार इन्दौर

-पी.आर.जोशी, उषानगर, इन्दौर

पुण्य स्मरण

श्री प्रभाकरराव दीक्षित, खण्डवा

देहावसान 29-04-2014, -कर्मठ, आत्मसंयमी, आत्मनिर्भर, सहयोगी, सहनशील व्यक्तित्व जिन्होने अपनी दिव्यांगता के बावजूद भी अपनों व परायों के जीवन को सींचा। खंडवा शहर में 50 वर्षों तक निशुल्क शिक्षा प्रदान कर गुरु की उपाधि से सम्मानित हमारे दादा की द्वितीय पुण्यतिथि पर आदरमयी श्रद्धांजलि हम आपके बताए मार्ग पर चलने की इच्छा रखते हैं।

प्रदीप, आशीत, कांची, प्रांशी, प्रयांश एवं समस्त दीक्षित परिवार, खंडवा

श्रीमती सुशीलादेवी नागर, ब्यावरा

शिक्षा जगत में अपनी सेवाएं देने वाली वयोवृद्ध 104 वर्षीय श्रीमती सुशीलादेवी नागर का निधन हो गया। वे चतुर्भुज नाथ कन्याशाला व नगर की अन्य शैक्षणिक शालाओं में सेवा देकर शिक्षक जगत का आधार स्तंभ थी। श्रीमती नागर अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गई हैं। वे नरेन्द्र नागर (कृषि संचालक), बृजेश नागर (बैंक मैनेजर) की माताजी एवं देवेन्द्र नागर व मनीष नागर की दादीजी थी।

आपके अंतिम संस्कार में समाज ने शोकसभा कर श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में पं.श्याम नागर (सहज धाम), डॉ.गिरिश नागर, मनोहरलाल नागर, पं.रमेश नागर (नागर समाज अध्यक्ष), पं.दीपक नागर, पं.शैलेन्द्र नागर आदि थे।

स्वर्गीय बलदेव जी नागर
(निवाई- राजस्थान)
प्रथम पुण्य स्मरण
दिनाक-17/06/16
अश्रुपूरित श्रद्धांजलि-
श्रद्धानवत-समस्त नागर परिवार, खिलचीपुर, उज्जैन एवं निवाई

द्वितीय पुण्यतिथि

श्री रामकिशोरजी नागर
प्रभुमिलन 3-6-14

श्रद्धावनत- पं. नरेन्द्र-इंदिरा, पं.ओम, पं.मोहन, पं.अशोक, पं. धर्मेन्द्र-अनिता, पं.लोकेन्द्र-सीमा, कुसुम, पं. रमेशचन्द्रजी, ममता, पं. पुनीत भट्ट, अम्बिका-रोहित, नेहा, अमित, कुशाग्र, अनामिका, प्रज्ञा, ऋिग्वित, अथर्व, शिवाशीष नागर एवं समस्त नागर परिवार।

डॉ. सूर्यप्रकाशजी नागर

65वीं सूर्य जयंती (शिक्षण, खेल, पर्यावरण, वनस्पति शास्त्र विशेषज्ञ)
दिनांक 8 जुलाई 2016
प्राध्यापक होलकर कॉलेज, इन्दौर
अंतरराष्ट्रीय टेनिस, खिलाड़ी,
श्रद्धावनत- श्रीमती जया, अपूर्व सौ.श्रुति नागर, जोशी, जाधव, तिवारी (महू) परिवार

-पी.आर. जोशी, इन्दौर

पुत्री ने दी मुखाग्नि

कोटा निवासी श्री शिवदत्तजी झा का देवलोक गमन 25 जून को हो गया। उनकी बड़ी पुत्री श्रीमती आरती झा ने मुखाग्नि दी तथा अन्य पुत्रियों ने अर्थी को कंधा दिया।

पुण्य स्मरण

श्रीमती शकुन्तला व्यास
(प्रभू शरण 30-06-1992)
श्रद्धावनत- पुत्र महेश-हेमलता व्यास
पुत्र- दिनेश-मंगला व्यास,
पोता- बबलू-दीक्षा व्यास, कालू,
राहुल व्यास, परपोत्री- सिद्धि, टीना

श्री गोवर्धनलाल जी नागर, माचलपुर

डॉ.मोहनलाल नागर के बड़े भ्राता एवं पं.रमेशचन्द्र नागर के पूज्य पिताजी श्री गोवर्धनलालजी नागर (वकील सा.) का देहावसान 6 जून 2016 को हो गया। परिजनों, रिश्तेदारों एवं समाजजनों ने भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की।

पुण्य स्मरण

श्री रमेशचन्द्रजी नागर
15-7-2014
श्रद्धावनत- समस्त नागर परिवार

16वाँ पुण्य स्मरण

अंगुली थामे आपकी, हुई जिंदगी की शुरुआत
सफलता उन्नति जो भी पाई सब आपका आशीर्वाद...

कर्म, स्नेह, सेवा और समर्पण की प्रतिमूर्ति

डॉ.शरदचन्द्रजी झा

अवसान 26 जून 2000

श्रद्धावनत – समस्त झा परिवार, राऊ–इन्दौर

CHANDRASHREE LABORATORIES & FARM PRODUCTS P.LTD. RAO (INDORE) 453 331
"CHANDRASHREE BHAWAN" 13, JANKI NAGAR INDORE, Mo.: 9826046013

स्व.पिताम्बरलालजी दादाजी

स्व.श्रीमती मीराबाई दादीजी

जसवंतपुरा जिला जालोर (राज.)

चि.डॉ. वैभव नागर को मैसूर के जे.एस. मेडिकल कॉलेज में एम.डी. एनेस्थिसिया हेतु प्रवेश पर

बधाई... शुभकामनाएँ...

चि. डॉ. वैभव नागर

(एम.डी. एनेस्थिसिया)

जे.एस. मेडिकल कॉलेज, मैसूर

जन्म दिनांक 7-11-1987

उपलब्धियों के शिखर पर हमेशा साथ है हमारा आशीर्वाद...

नानाजी–नानीजी– दयाराम नागर – चन्द्रकला नागर, सुमेरपुर

बड़े पापा–मम्मी– विष्णुप्रसाद नागर–सौ.लक्ष्मी नागर,

बड़े पापा–मम्मी– परेश (पुरुषोत्तमलाल)–सौ.मंजूला नागर

पापा–मम्मी–मदनलाल नागर (महेन्द्रभाई)–सौ.गीतांजलि नागर

अंकल–आंटी– रमेश नागर–सौ.संगीता नागर

अंकल–आंटी– विनोद नागर–सौ.नीरू नागर

निवास स्थान : 'प्रमुख कृपा' नं. 19, फर्स्ट सी क्रास, फर्स्ट मेन, मनु वना, विजय नगर, बैंगलोर-40

सम्पर्क : मो. 09342816914, निवास- 080-23204623

प्रतिष्ठान

विष्णुप्रसाद मदनलाल
गोविंदलाल नागर
मो. 07665147511
जसवंतपुरा (राज.)

मारवल इंटरनेशनल, बैंगलोर
मदनलाल नागर (महेन्द्रभाई)
मो. 09342816914
निवास– 080-23204623
विनोदकुमार नागर
मो. 09449974791

मयुर मार्केटिंग प्रा.लि.मुम्बई
पुरुषोत्तमलाल (परेशभाई)
मो. 09322513091
रमेश नागर
मो. 09322136600

परमेश्वर ओवरसीज, दिल्ली
ललित नागर
मो. 09313832046
भरत नागर
मो.09312127757

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स,
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा 40 मो. 94250 63129
LATE POSTING